मैं भारत हूँ

भारतीय सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक भावना को प्रेरित करती पत्रिका

वर्ष-१२, अंक-०७ अक्टूबर २०२२ मुम्बई सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ४४ मूल्य १००.०० रूपए

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

सूरत
भाग १

सूरत शहर के ऐतिहासिक प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

NXTBLOC®
AUTOCLAVED AERATED CONCRETE BLOCKS

Narayan Saboo
Director

BIGBLOC CONSTRUCTION LTD.

BIG BLOC CONSTRUCTION

A/601-B, International Trade Centre, Majura Gate,
Ring Road, Surat, Gujarat, Bharat-395002
PH.: 0261-2463261, 2463262, 2463263
Fax : 0261-2463264 | E-mail : narayan.saboo@nxtbloc.in
Visit us : www.nxtbloc.in

यह है हम भारतवासियों का भारत सरकार से निवेदन

जरूर देखें : http://www.mainbharathun.co.in भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए INDIA नहीं

पधारो म्हारे देश

मेरा राजस्थान

सम्पादक : बिजय कुमार जैन

राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त राजस्थान समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

राजस्थान का इतिहास
पहुँचाए आपके हाथ

मात्र रु. १००/- में, प्रति महिना

सम्पादक
बिजय कुमार जैन

उपसम्पादक
संतोष जैन 'विमल'

कार्यकारी सम्पादक
अनुपमा शर्मा (दाधीच)

पंजीकृत कार्यालय
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९
दूरध्वनि: ०२२-२८५० ९९९९ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com

विशेष छूट
विज्ञापन देने पर
पूरे साल
'मेरा राजस्थान'
पत्रिका मुफ्त

वार्षिक शुल्क १,१११/-
आजीवन शुल्क ११,१११/-

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत क्र. U80300MH2021NPL369101

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर

जय भारत! जय भारत! जय भारत!

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

www.mainbharathun.co.in

You are invited to a

HISTORIC EVENT

Being conducted to promote an amendment to **Article 1** of our Constitution wherein our country is globally recognized as **'Bharat'** and not India.

Grace the event with your presence

on

16TH NOVEMBER, 2022

from

04:00 P.M. TO 07:00 P.M.

at

THE INDIAN SOCIETY OF INTERNATIONAL LAW

V. K. Krishna Menon Bhawan
9, Bhagwan Dass Road,
New Delhi - 110001

विजय कुमार जैन	शोभा सादानी	गोविन्द मोहश्वरी	निशा लड्ढा
Bijay Kumar Jain	Shobha Sadani	Dr. Govind Maheshwari	Nisha Laddha
National President	National Gen. Secretary	National Vice-President	National Treasurer

अगला विशेषांक नवंबर २०२२

भारत की विश्व प्रसिद्ध नगरी सूरत (भाग २)

भारत की विश्व प्रसिद्ध नगरी 'सूरत' का परिचय मात्र १ अंक में करना मुश्किल ही नहीं नामुमकीन है।
निवेदन किया जाता है कि जो कुछ भी सूरत का इतिहास या वर्तमान की बातें सूरत भाग १ के प्रकाशन में छूट गयी हैं, वह हमें भिजवाएं ताकि 'सूरत' का इतिहास भाग २ में प्रकाशित किया जा सके। संपर्क करें ०२२-२८५०९९९९
'भारत को 'भारत' ही बोलें INDIA नहीं' - संपादक

सूरत जिला के ऐतिहासिक प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

AASHISH JAINN
Mob: 98258 00046

SHALU DYEING & PRINTING MILLS PVT. LTD.

262. G.I.D.C.. Pandesara, Surat,
Gujarat, Bharat - 394221
Ph.0261-2891092/93/94
E-mail shaludye,83@gmail com

!! श्री गणेशाय नमः!!

सच्चिदानन्दरूपाय विश्वोत्पत्यादिहेतये ।
तापत्रय विनाशय श्रीकृष्णाय वयं नुमः ॥

(जिसका स्वरूप सच्चिदानन्द है, जो इस समस्त विश्व की उत्पति, पालन एवं संहार करते है,
जो उसके भक्तों के लिए तीनों ताप का विनाश करते हैं, हम सभी वोह श्री राधा कृष्ण को नमन करते हैं।)

संगीतमय श्रीमद् भागवत कथा आयोजन

स्नेही भागवत प्रेमी,

जय श्रीकृष्णा

श्रीमद्भागवत की कथा वेद और उपनिषदों का सार है और सकल शास्त्रों का फल है, श्रीमद् भागवत की कथा का सेवन, श्रवण एवं आस्वादन करने से श्रीहरिः हृदय में आते हैं। श्रीमद् भागवत कथा महात्म्य अतुलनीय एवं अवर्णनीय है।

आप सभी को सूचित करते हुए हमें परम हर्ष हो रहा है कि राधारानी की असीम अनुकम्पा से श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टीबड़ेवाला विश्वविद्यालय, चुड़ैला (झुंझुनूं-राज.) के द्वारा श्रीमद्भागवत कथा का दिव्य आयोजन दिनांक 24 नवम्बर से 30 नवम्बर 2022 तक कराने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। व्यासपीठ पर विराजित परम पूज्य शान्तिदूत ''धर्मरत्न'' श्री देवकीनंदन ठाकुर जी महाराज अपनी ओजस्वी, ललित एवं रसमयी अमृतवाणी द्वारा कथा पियूष का रसास्वादन करायेंगे।

आपसे सादर अनुरोध है कि इस महाकथा ज्ञानयक्ष में सपरिवार एवं इष्टमित्रों सहित पधारकर मंगलकारी कथा का श्रवण कर अपने जीवन को धन्य करें।

कथा स्थल

श्री जे.जे.टी. विश्वविद्यालय
विद्यानगरी, चुड़ैला, (झुंझुनूं-राज.)

दिनांक - 24 से 30 नवम्बर
समय - दोपहर 12 बजे से 4 बजे तक

निवेदक :
डॉ. विनोद टिबड़ेवाला
कुलाधिपति श्री जे.जे.टी. विश्वविद्यालय

मैं भारत हूँ

वर्ष -१२, अंक ०७, अक्टूबर २०२२

वार्षिक मुल्य
रु.१११११/-
१२ अंकों का

सम्पादक - बिजय कुमार जैन

उपसंपादक - संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)

- 'मैं भारत हूँ' में प्रकाशित लेखों/ कविताओं/समाचारों/ विज्ञापनों से पूर्ण सहमत होना सम्भव नहीं है।
- 'मैं भारत हूँ' से सम्बन्धित समस्त विवादों के लिये न्याय क्षेत्र अंधेरी, मुम्बई ही मान्य माना जायेगा।

सम्पादकीय मुख्य कार्यालय
गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि.
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट,
मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र,
भारत - ४०० ०५९
दूरभाष :- ०२२-२८५० ९९९९
अणु डाक :- mailgaylordgroup@gmail.com
अन्तरताना:- www.mainbharathun.co.in

कृपया विज्ञापन बिल की राशि का भुगतान
नीचे दिये गए बैंकों में जमा करा सकते हैं

HDFC Bank
Andheri East Branch
RTGS / NEFT
IFSC: HDFC 0000592.
Account No.05922320003410

State Bank Of India
(01594) Marol Mumbai Branch.
IFS Code :SBIN0001594.
Account No. 030338727406.
in the name of GAYLORD PUBLICATIONS PVT.LTD.
Payment Transfer & Inform to us on: 9322307908

सम्पादकीय ....

ताप्ती नदी व तीन पत्ती मंदिर श्रृंगार है व्यापारिक नगरी सूरत की

भारत के मानचित्र में आज 'सूरत' का परचम लहरा रहा है कारण यह है कि 'सूरत' में भारत के विभिन्न शहरों से ही नहीं गांव से भी 'सूरत' में आकर प्रवासित हुए अपनी कर्मठता से 'सूरत' को भारत की उच्चतम धरोहर बना दिया।

आज से २५ साल पहले के 'सूरत' में और आज के 'सूरत' में जितना अंतर आया है वह भारत के अन्य राज्यों के किसी भी शहर में देखने को नहीं मिलता। किसी समय सबसे गंदा शहर कहा जाने वाला 'सूरत', आज भारत का दूसरा सबसे स्वच्छ शहर कहा जाने लगा और यह सब दूरदर्शिता की सोच रखने वाले 'सूरत' के निवासी और प्रवासियों की ही तो है। व्यापारिक दृष्टिकोण से भी 'सूरत' ने अपना नाम और विश्वस्तर पर रोशन किया है। आज भारत का एक राज्य गुजरात का एक शहर 'सूरत' से भारत ही नहीं विश्व के कोने-कोने में निर्यात व आयात हो रहा है चाहे वह हीरा व्यवसाय हो या जरी का या हो साड़ी या कपड़ों का हर व्यवसाय में सूरत के निवासियों व प्रवासियों ने अपना लोहा मनवाया है।

कर्मठता हो या इमानदारी या अपने स्वभाव में प्यार व जुबान पर मृदुलता मानव जीवन की अच्छाईयां सूरत के हर निवासी-प्रवासियों में कूट-कूट कर भरी जो है इसका मूल कारण है पवित्रता की मिसाल ताप्ती नदी और अद्भुत प्राकृतिकता की देन मात्र तीन पत्ती का पेड़...

'मैं भारत हूँ' पत्रिका के ऐतिहासिक विशेषांक 'सूरत' का भाग १ के प्रकाशन के समय जब सूरतवासी-प्रवासियों से संपर्क के समय जब पता चला की 'सूरत' की माटी में प्राकृतिक संपदा व मानव जीवन को निखारने वाली सोच के धनीयों की भरमार है तो बरबस निकल पड़ा कि वाह रे वाह! सूरत की माटी, तूने सबको निखारा है अब 'भारत' मां के साथ लगे गुलामी की बिंदी INDIA को मिटाने का प्रयास भी सूरतवासी ही करेंगे, ताकि विश्व को 'भारत' माँ कह सकेगी की 'मैं भारत हूँ।

मैं सभी 'सूरत' वासियों से निवेदन करता हूं कि प्रस्तुत अंक सूरत का इतिहास भाग १ में जो भी प्रस्तुतियां या विशेषताएं रह गई या छूट गई हैं हमें जल्द से जल्द भिजवाएं ताकि सूरत का इतिहास भाग २ में प्रकाशन किया जा सके।

'सूरत' का इतिहास भाग १ कैसा लगा, कृपया अपने विचारों से हमें जरूर अवगत कराएं। जय हो सूरत की माटी के निवासी-प्रवासियों के साथ ताप्ती नदी की पवित्रता, तीन पत्ती के अप्राकृतिक सौंदर्यता की।

जय भारत!
जय भारतीय संस्कृति!

राष्ट्र की परिभाषा
भाव-भूमि-भाषा

आपका अपना
बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी
भारत को भारत कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय

जन-जन की आशा है हिंदी, भारत की भाषा है हिंदी-बिजय कुमार जैन

जय भारत! जय भारत! जय भारत!

Hon'ble Speaker

Pravin H. Parekh
Sr. Advocate
Supreme Court Of India

दिगम्बराचार्य
विद्यासागर जी

Keynote Speaker

Bijay Kumar Jain
Senior Journalist & Editor
National President
Main Bharat Hun Foundation

Supreme Court 100 Advocates
एक साथ-एक मंच पर

भारत के इतिहास में प्रथम बार

विश्व में फैले भारतीय विभूतियों की भी रहेगी उपस्थिति

चर्चा करेंगे

भारत को केवल 'भारत' ही बोलें INDIA नहीं?
भारतीय संविधान के अनुच्छेद क्रमांक १ में
INDIA that is Bharat में होगा बदलाव
याचिका भेजेंगे भारत सरकार को
ताकि भारत को केवल 'भारत' ही बोला जा सके

Venue
The Indian Society of International Law, (ISIL)
V.K. Menon Bhawan, 9, Bhagwan Das Marg, Delhi, Bharat-110001
Wednesday 16th Nov 2022, 4.00 PM to 7.00 PM

बढ़ाएं हाथ-देंगे साथ तो ही विश्व को 'भारत' माँ कह सकेगी

मैं भारत हूँ

Organised By:- http://mainbharathunfoundation.com

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत क्र. U80300MH2021NPL369101

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

विशेष जानकारी, सहयोग व उपस्थिति के लिए संपर्क करें
9322307908/9830224300

सौजन्य:

श्वेताम्बर जैन दिगम्बर
जिनागम
सम्पादक-विजय कुमार जैन
समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

मेरा राजस्थान
सम्पादक-विजय कुमार जैन
राजस्थानियों के विचारों के साथ समस्त समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

मैं भारत हूँ
सम्पादक-विजय कुमार जैन
भारतीय राजनीति से प्रेरित एकमात्र पत्रिका

कई-कई एवार्डों से सम्मानित विश्वस्तरीय सम्मानित पत्रिकाएं, मुंबई-दिल्ली-कोलकाता से प्रकाशित

सूरत में कार्यरत अग्रवाल समाज विद्या विहार ट्रस्ट

सूरतः अग्रवाल समाज विद्या विहार ट्रस्ट की स्थापना सन २००० में की गई थी। सन २००२ में ट्रस्ट द्वारा वेसु, सूरत में स्थापित अग्रवाल विद्या विहार स्कूल, जिसमें आज कक्षा जूनियर केजी से कक्षा बारहवीं तक के ३४६० बच्चे एवं २० शिक्षकगण, कर्मचारीगण हैं, साथ ही सन २००७ में स्थापित अग्रवाल विद्या विहार अंग्रेजी माध्यम कॉलेज में स्नातकोत्तर तक के ७५० बच्चे एवं ४२ व्यख्यायान है। लगभग दो दशकों से विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को बढ़ावा देना शुरू किया गया है। विद्यालय और महाविद्यालय का संचालन करके हम अपने युवाओं को सही दिशा देने वाली शिक्षा के प्रति अपनी सामूहिक जिम्मेदारी को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। अग्रवाल समाज विद्या विहार ट्रस्ट, स्कूल और कॉलेज के बच्चों की व्यक्तिगत क्षमता और प्रतिभा को पूर्ण रूप से विकसित करने के लिए व्यक्तिगत रूप से भी निर्देशित किया जाता है। छात्रों को समृद्ध और बहुआयामी सेवा के माध्यम से अच्छे चरित्र और वैश्विक नागरिकता विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करता है। छात्रों को जीवन के हर चरण में चुनौतियों का सामना करने के लिए मार्गदर्शन दिया जाता है।

ट्रस्ट शिक्षा के एक और आयाम को छूते हुए शहर के डिंडोली विस्तार में ५००० से अधिक बच्चों को पढ़ा सके, ऐसा शैक्षणिक संस्था के निर्माण की ओर अग्रसर है।

सूरत में कार्यरत अग्रवाल प्रगति ट्रस्ट

सूरतः अग्रवाल प्रगति ट्रस्ट की स्थापना सन २०१० में हुई थी, इसमें ११५० सौ से ज्यादा ट्रस्टीज एवं सदस्य हैं। इस सामाजिक संस्था का मुख्य उद्देश्य समाज को एक धारा में जोड़ना, समाज का उत्थान करना, जरूरतमंदों की सहायता करना। महाराजा अग्रसेन जी के 'एक रुपया-एक ईंट' के सिद्धांत को प्रतिपादित करते हुए अंतिम पंक्ति में खड़े लोगों को राष्ट्र की मुख्य धारा में लाना। अभी तक काफी कार्य संस्था करती रही है। सूरत के 'दूम्मस' में इस ट्रस्ट के अंतर्गत जो भवन बना है, उसका नाम है अग्र-Exotica, वह अपने आपमें सराहनीय है, पूरे भारत में इस तरह का कोई भी भवन आपको देखने को नहीं मिलेगा, इस भवन में दो सुसज्जित बैंक्वेट हैं, इसके अलावा १०४ कमरें हैं, जिनमें करीब ४०० आगंतुक रूक सकते हैं, यह भवन बारह मंजिलों की ऊंचाई का बना है। दो बड़े हॉल है, जहां दो बड़े समारोह हो सकते हैं। सेमिनार हो सकते हैं। हॉल में ७०० लोग बैठ सकते हैं। बेसमेंट में २०० गाड़ियों की पार्किंग की व्यवस्था है। बहुत ही आधुनिक और सुसज्जित भवन है। भवन में आकर आगंतुकों को महसूस होता है कि मैं मेरे घर में ठहरा हूँ।

सेवा का पर्याय बना है अग्रवाल प्रगति ट्रस्ट...

ट्रस्ट द्वारा समय-समय पर विभिन्न तरह के कार्यक्रम होते रहते हैं, जिससे समाज के लोगों को फ़ायदा होता है, इसी भवन में नई शिक्षा नीति २०२० पर तीन दिन तक खुब मंथन हुआ, जिसमें शिक्षाविद, आचार्य, कुलपति, शिक्षक लगभग ४०० की संख्या में उपस्थित थे सभी ट्रस्टी सेवभावी है।

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

Remove 'INDIA' Name From The Constitution

भारत की मानसिक उन्नति भली-भाँति तभी हो सकती है, जय शिक्षा का माध्यम 'हिन्दी' हो - पं. रामनारायण मिश्र

भारतीय मुद्राओं में भारत माता का चित्र प्रकाशित हो तो अच्छा हो सकता है - बिजय कुमार जैन, वरिष्ठ पत्रकार व संपादक

करंसी नोटों पर किसका फोटो लगना चाहिए, इसको लेकर नए सिरे से बयानबाजी शुरू हो गई है। देवी-देवताओं से लेकर महापुरूषों के नाम भी सुझाए जा रहे हैं, लेकिन मैं भारत हूँ फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष बिजय कुमार जैन का कहना है, भारतीय नेताओं से यह पूछना चाहिए कि देश की करंसी की साख सुधारने के लिए उनके पास क्या योजना है?

नोट पर गणपति और लक्ष्मी का फोटो छापने की मांग करने वाले दिल्ली के मुख्यमंत्री द्वारा यह मांग करना सचमुच आश्चर्यजनक है। करेंसी नोट पर किसका फोटो हो उसका एक इतिहास होता है, उसके मुताबिक ही करंसी नोटों पर फोटो छापे जाते हैं। अपने देश में नोटों पर (राष्ट्रपिता) महात्मा गांधी की फोटो भी उसी इतिहास के अनुरूप है।

श्री जैन ने यह भी कहा कि नोट पर किसका फोटो हो इसके बजाय भारतीय मुद्रा की प्रतिष्ठा कैसे सुधारें, इस पर विचार किया जाना जरूरी है। धर्म निरपेक्ष देश में धर्मों के बीच फूट डालने की राजनीति सफल नहीं होने देने के लिए यह जरूरी है कि हम सभी इस कुचक्र में ना फंसे। यदि भारत सरकार चाहे तो भारतीय मुद्राओं में 'भारत माँ' का चित्र प्रकाशित किया जाए तो किसी भी तरह का विरोध नहीं होगा और १३५ करोड़ भारतीयों को मान्य भी होगा। जय भारत!

- मैंभाहूँ

किसने की कौन से चित्र छापने की मांग

नेता	पार्टी	मांग
अरविंद केजरीवाल	आम आदमी पार्टी	गणपति और लक्ष्मी
नीतेश राणे	बीजेपी	छत्रपति शिवाजी महाराज
मनीष तिवारी	कांग्रेस	बाबासाहेब आंबेडकर
राम कदम	बीजेपी	छत्रपति शिवाजी महाराज, बाबासाहेब आंबेडकर, विनायक दा. सावरकर, नरेंद्र मोदी
सचिन खरात	रिपाई गुट	गौतम बुद्ध
बिजय कुमार जैन	मैं भारत हूँ फाउंडेशन	भारत माता

यह विशेषताएं भी बनाती हैं सूरत को खास

१. ई-व्हीकल पॉलिसी लागू करने वाला 'भारत' का पहला शहर 'सूरत'
२. दूसरा स्वच्छ शहर की मान्यता 'सूरत' को भारत का लगातार तीन वर्षों से...
३. सोलर सिटी: सूर्य ऊर्जा का उपयोग करने में 'सूरत' देश में सबसे आगे।
४. जल व्यवस्था: हाइड्रोलिक नेटवर्क इंटरलिंकिंग में सबसे आगे 'सूरत' शहर।
५. देश की पहली स्टील की सड़क (एक किमी लंबी, ६ लेन की) 'सूरत' के हजीरा में।
६. विश्व में पहला १७५१ किलोग्राम का पारे का शिवलिंग अटल आश्रम 'सूरत' में।
७. एशिया का पहला मेरू महालक्ष्मी मंदिर जो श्री यंत्र के आकार में बना है 'सूरत' में।
८. राजस्थान के खाटूश्याम मंदिर के बाद दूसरा सबसे बड़ा खाटू धाम 'सूरत' में।
९. देश की सबसे पवित्र नदियों में एक सूर्यपुत्री ताप्ती 'सूरत' में।
१०. 'सूरत का झमण और काशी का मरण' खानपान में सैकड़ों तरह के जायके के लिए विश्व प्रसिद्ध शहर 'सूरत'। जय भारत!

सूरत जिला की ताकत से पूरा भारत डोलता है
यह हम नहीं हमारा इतिहास बोलता है

Ramcharan Agarwal (Khoradia)
Mob: 9825119450

PRIYANKA PROCESSORS PVT. LTD.

495, G.I.D.C., Pandesara, Surat, Gujarat, Bharat-394221
Phone:0261-2890223 | e-mail:r9825119450@gmail.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

सूरत ने हर किसी को अपनाया है

रामगोपाल मुंदड़ा
उद्योगपति व समाजसेवी
सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९७३७०७७७७७

रामगोपाल जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि हमारे 'सूरत' शहर ने पहले के मुकाबले बहुत तेजी से प्रगति की है यह भारत का सबसे तेजी से प्रगति करने वाला शहर है, आज भी इसकी प्रगति दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। 'सूरत' प्रारंभ से ही टेक्सटाइल और डायमंड का केंद्र रहा है और आज इसकी व्यवसायिक गतिविधियां बहुत अधिक बढ़ गई है और इन्हीं से जुड़े अन्य व्यवसाय भी यहां बहुत तेजी से फैल रहे हैं, उद्योग नगरी होने के कारण भारत के सभी प्रांतों व क्षेत्रों के लोग 'सूरत' में बसे हैं सूरत ने हर किसी को अपनाया है, जिसने भी नेकी और इमानदारी से काम किया है उसकी प्रगति अवश्य हुई है। यहां राजस्थान, हरियाणा, पंजाब के लोग विशेष कर व्यवसाय के साथ अन्य क्षेत्रों में ऊंचे पदों पर कार्यरत हैं। डायमंड व्यापार में यहां के गुजराती लोग कार्यरत हैं। सूरत की मिट्टी ही ऐसी है हर किसी को अपनाती है। यहां रहने वाला हर व्यक्ति सूरत से प्यार करता है। यहां के लोग बड़े ही शांत प्रवृत्ति के हैं, यहां के लोग प्रवासियों से ऐसे मिल गए जैसे दूध में पानी। यह व्यवसायिक नगरी तो है ही साथ ही धार्मिक नगरी भी कही जा सकती है। यहां के लोग बड़े ही धार्मिक प्रवृत्ति के हैं, यहां हमेशा ही किसी न किसी धर्म और समाज के धार्मिक कार्यक्रम होते ही रहते हैं, जिसमें सभी समाज के लोग सम्मिलित होते हैं। पर्यटन की दृष्टि से यह बहुत ही उत्तम स्थान है। यहां अंबाजी का मंदिर, श्याम खाटू जी का मंदिर विशेष रूप से उल्लेखनीय है। १५-२० किलोमीटर दूरी पर स्थित 'दूम्मस' है, जो पर्यटन के लिए विशेष जाना जाता है। सूरत के लोग खाने-पीने के भी बड़े शौकीन होते हैं इसीलिए यहां एक कहावत प्रसिद्ध है 'सूरत नो जमण काशी नो मरण'। सूरत में हर प्रकार के भोजन आसानी से प्राप्त हो जाते हैं। ऐसी अन्य कई विशेषताएं है हमारे 'सूरत' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि भारत वैदिकता का प्रतीक है, 'भारत' नाम में ही हमारा गौरव निहित है अतः इस अभियान का मैं पूर्णत: सकारात्मक समर्थन करता हूं।

रामगोपाल जी मूलतः राजस्थान स्थित मकराना के 'पर्वतसर' के निवासी हैं। आपका परिवार लगभग १२५ वर्षों से मध्यप्रदेश के 'पिपरिया' में बसा हुआ है। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। १९७४ में आप व्यवसाय हेतु मध्यप्रदेश के बुरहानपुर में आकर बसे, यहां से आप १९८२-८३ में सूरत आए और कपड़ों की ट्रेडिंग के व्यवसाय से जुड़े। आप और आपके छोटे भाई के अथक प्रयास से आज आपकी कंपनी 'मधुसूदन ग्रुप' के नाम से जानी जाती है। आप टैक्सटाइल इंडस्ट्री से जुड़े हुए हैं, आप सामाजिक कार्यों में भी बढ़-चढ़कर सहभागी होते हैं, विभिन्न सामाजिक व धार्मिक संगठनों में विशेष पदों पर सेवारत रहे हैं।

अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के पूर्व उपसभापति, राजस्थान परिषद सूरत के पूर्व अध्यक्ष के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान का हैं। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा, वन बंधु परिषद सूरत, राजस्थान फाउंडेशन सूरत चैप्टर, मध्य प्रदेश माहेश्वरी युवा संगठन, साउथ गुजरात ग्राहक सुरक्षा शिक्षण संशोधन केंद्र सूरत, टैक्सटाइल कोऑपरेटिव बैंक ऑफ सूरत लिमिटेड के उपाध्यक्ष रहे हैं। गुजरात प्रांतीय माहेश्वरी सभा, अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन गुजरात प्रदेश, गुजरात प्रदेश माहेश्वरी युवा संगठन के अध्यक्ष रहे हैं। सामाजिक संस्थाओं में पदों पर अपनी भूमिका निभाई है। आपके सेवा कार्यों के लिए आपको २००२ में अर्नबल गवर्नर ऑफ गुजरात स्टेट से गुजरात गौरव अवॉर्ड, २०१५ में सूरत जिला माहेश्वरी सभा से महेश रत्न व २०१५ में माहेश्वरी एकता मकराना राजस्थान द्वारा माहेश्वरी ऑफ डिकेड से सम्मानित किया गया है, अन्य कई पुरस्कार प्राप्त कर आपने अपने जीवन में श्रेष्ठता प्राप्त की है। अमेरिका के मैक्सिकन सिटी में अंतर्राष्ट्रीय माहेश्वरी महासभा द्वारा आयोजित कार्यक्रम में आप को चीफ गेस्ट के रुप में आमंत्रित किया गया था बतौर चीफ गेस्ट आपके द्वारा दिये गए वक्तव्य की काफी सराहना की गई थी। उस समय आप अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष थे। जय भारत!

पहली बार पिता के बाद बेटा होगा भारत के सर्वोच्च न्यायालय का प्रमुख न्यायाधीश

नई दिल्ली: भारत के प्रमुख न्यायाधीश यू.यू. ललित ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में सर्वोच्च अदालत के सबसे सीनियर जस्टिस डी.वाई. चंद्रचूड़ के नाम की सिफारिश केंद्र सरकार को भेज दी है।

सरकार की मंजूरी मिलने पर जस्टिस चंद्रचूड़ सुप्रीम कोर्ट के ५०वें चीफ जस्टिस होंगे। वह ९ नवंबर को शपथ लेंगे। यह पहली बार होगा, जब किसी चीफ जस्टिस का बेटा चीफ जस्टिस वाई.वी. चंद्रचूड़ का कार्यकाल सबसे लंबा रहा था। वह देश के १६वें चीफ जस्टिस थे और फरवरी १९७८ से जुलाई १९८५ तक ७ साल सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस रहे थे। जस्टिस डी.वाई. चंद्रचूड़ अपने पिता के रिटायर होने के ३७ साल बाद उसी पद पर बैठेंगे, उनका कार्यकाल १० नवंबर २०२४ तक यानी दो साल का रहेगा।

एक भाषा की वजह से एकता को सफलता मिल सकती है, वह हिन्दी ही है - बिजय कुमार जैन

भारत में एक राज्य गुजरात का एक शहर 'सूरत'

'सूरत' एक ऐतिहासिक शहर है। सूरत का एक समृद्ध इतिहास रहा है। अंग्रेजों ने अपना प्रथम स्थान 'सूरत' को ही बनाया था, यहीं से उन्होंने सारे भारत में पैर पसारे थे। ताप्ती नदी के किनारे बसा हुआ 'सूरत' अकबर बादशाह के समय में व्यवसायिक केन्द्र एवं प्रथम श्रेणी का बन्दरगाह था। बम्बई के नजदीक होने का लाभ भी सूरत को मिला, मराठा काल में सूरत दो बार छत्रपति शिवाजी की लूट का शिकार भी बना था।

सूरत के ऐतिहासिक एवं दर्शनीय स्थलः

सुरत शहर में गोपी तालाब, मुगलीसरा, मरजान शामी की मस्जिद, ख्वाजादाना साहेब की मस्जिद, चन्द्रप्रभु मन्दिर, कलॉक टावर, दयालजी विद्यार्थी आश्रम, चिंतामणी जैन मन्दिर, डच कब्रिस्तान, अंग्रेज कब्रिस्तान, आर्मोनियम कब्रिस्तान, किला, होपपुल, बेगमवाडी, एन्जियल चर्च, सोराबजी ट्रेनिंग कॉलेज, विक्टोरीया गार्डन आदि ऐतिहासिक इमारतें हैं, इनकी देखभाल भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण और सूरत महानगर पालिका मिलकर करती है।

स्वामीनारायण मन्दिर, पण्डित दिनदयाल उपाध्याय इन्डोर स्टेडियम, चौपाटी, गाँधी बाग, मछली घर, लेकव्यू गार्डन, चिल्ड्रन पार्क, सुभाष सरोवर, सरदार पटेल म्यूजियम, प्लेनेटोरियम, रिवोल्विंग रेस्टोरन्ट, अंबिका निकेतन, साईंबाबा मन्दिर, मोटी हवेली, अम्बाजी मन्दिर, भक्तिधाम मन्दिर, बालाजी मन्दिर, श्री महाप्रभुजी की बैठक, जलाराम मन्दिर, (मीनी विरपुर), सप्तश्रृंगी माताजी मन्दिर, जहांगीरपुरा में हरेकृष्णा मंदिर आदि अनेक दर्शनीय स्थल हैं। अश्विनीकुमार में एक अति पुराना बरगद का पेड़ है, जिस पर सदा 'तीन पत्तियाँ' ही रहती हैं, इसलिए इसे 'तीन पत्ती' का पेड़ कहते हैं।

औद्योगिक नगरीः दुनिया भर में 'सूरत' का नाम डायमण्ड नगरी और कपड़ा व्यापार की वजह से जाना जाता है। 'सूरत' गुजरात का दूसरा सबसे बड़ा औद्योगिक शहर गिना जाता है, यहाँ पर बहुत से उद्योग अंतरर्राष्ट्रिय स्तर के स्थापित हैं। यहाँ का सबसे बड़ा उद्योग आर्ट शिल्क कपड़ों का है, लगभग ५ लाख पावर लूम्स है तथा प्रतिदिन करोड़ों मीटर मानव निर्मित कपड़ा तैयार होता है। ५०० प्रोसेस हाऊस हैं जहां पर कपड़े की रंगाई व छपाई का काम सुन्दर और कलात्मक डिजाइनों में आधुनिक मशीनों द्वारा होता है, यहाँ निर्मित कपड़ा 'भारत' में ही नहीं पूरे विश्व में निर्यात होता है, इसीलिए 'सूरत' को सिल्क सीटी भी कहते हैं। लगभग २०० मार्केट में ५० हजार व्यापारी हैं। 'सूरत' से रोज १५०० ट्रक कपड़ा भारत के विभिन्न शहरों में जाता है।

यहाँ का दूसरा बड़ा उद्योग हीरों की कटिंग एवं पोलीसिंग का है, करीब दो लाख मजदूर इस उद्योग में कार्यरत हैं। तीसरा पुराना जरी व्यापार है, इसके अतिरिक्त बहुत सी विश्वस्तर की व्यापारिक इकाईयाँ हैं। गुजरात गैस, रिलायन्स कम्पनी, एस्सार कम्पनी हजीरा, ओ.एन.जी.सी., कृषको फर्टिलाइजर आदि अनेक महत्वपूर्ण उद्योग ने 'सूरत' को समृद्ध बनाने में योगदान किया है।

'सूरत' पश्चिमी भारतीय राज्य गुजरात का एक शहर है। अरब सागर के साथ संगम के निकट ताप्ती नदी के तट पर स्थित यह एक बड़ा बंदरगाह हुआ करता था, यह अब दक्षिण गुजरात में वाणिज्यिक और आर्थिक केंद्र है, पश्चिमी भारत के सबसे बड़े शहरी क्षेत्रों में से एक है, 'सूरत' में हीरा और कपड़ा उद्योग स्थापित है, यह परिधानों और सहायक उपकरण के लिए एक प्रमुख आपूर्ति केंद्र है। दुनिया के लगभग ९०% हीरे **शेष पृष्ठ १२ पर...**

पृष्ठ ११ से ... की आपूर्ति 'सूरत' से की जाती है और पॉलिश की जाती है। अहमदाबाद के बाद गुजरात का दूसरा सबसे बड़ा शहर 'सूरत' है और जनसंख्या के हिसाब से आठवां सबसे बड़ा शहर और भारत में नौवां सबसे बड़ा शहरी समूह है। 'सूरत' जिले की प्रशासनिक राजधानी है, यह शहर राज्य की राजधानी गांधीनगर से २८४ किलोमीटर (१७६ मील) दक्षिण में स्थित है। २६५ किलोमीटर (१६५ मील) अहमदाबाद के दक्षिण में और २८९ किलोमीटर (१८० मील) मुंबई के उत्तर में। शहर का केंद्र अरब सागर के करीब ताप्ती नदी पर स्थित है।

'सूरत' २०३५ तक दुनिया का सबसे तेजी से बढ़ने वाला शहर होगा। शहर ने २००१ और २००८ के बीच सात वित्तीय वर्षों में ११.५% की वार्षिक जीडीपी विकास दर दर्ज की है। २०१३ में सूरत को भारत के सिटी-सिस्टम्स (एएसआईसीएस) के वार्षिक सर्वेक्षण द्वारा 'सर्वश्रेष्ठ शहर' से सम्मानित किया गया था। सूरत को भारत में पहले स्मार्ट आईटी शहर के रूप में चुना गया, जिसका गठन माइक्रोसॉफ्ट सिटीनेक्स्ट इनिशिएटिव द्वारा आईटी सेवाओं की बड़ी कंपनियों टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज और विप्रो के साथ किया जा रहा है। शहर में २.९७ मिलियन इंटरनेट उपयोगकर्ता हैं, जो कुल जनसंख्या का लगभग ६५% है। सूरत को २०१५ में आईबीएम स्मार्टर सिटीज चैलेंज ग्रांट के लिए चुना गया था। सूरत को प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के प्रमुख स्मार्ट सिटीज मिशन के तहत एक स्मार्ट शहर के रूप में विकसित करने के लिए बीस भारतीय शहरों में से एक के रूप में चुना गया है।

स्वच्छ सर्वेक्षण २०२० के अनुसार सूरत २१ अगस्त २०२० तक भारत के दूसरे सबसे स्वच्छ शहर के रूप में सूचीबद्ध हुआ, जबकि एक बड़ी पाइपलाइन को आग का सामना भी करना पड़ा, जिससे भारी नुकसान भी हुआ था।

हीरे की कटिंग और पॉलिशिंग के लिए प्रसिद्ध 'सूरत' को भारत के डायमंड सिटी के रूप में जाना जाता है।

शहर में एस्सार, लार्सन एंड टुब्रो और आरआईएल जैसे विभिन्न इंजीनियरिंग प्लांट हैं। 'सूरत' ने लचीलापन श्रेणी में यूनेस्को के साथ नेटएक्सप्लो स्मार्ट सिटीज अवार्ड २०१९ जीता।

शब्द-साधन:

'सूरत' की स्थापना गोपी नामक एक व्यक्ति ने की थी, जिसने इस क्षेत्र का नाम सूरजपुर या सूर्यपुर रखा था। डुटर्टे बारबोसा ने सूरत को 'सूरत' बताया। जैकब पीटर्स ने 'सूरत' को सॉराटे के रूप में संदर्भित किया जो एक डच नाम है। इतिहास में सूरत के और भी कई नाम हैं।

मुगल साम्राज्य से पहले सूरत

गुजरात को धीरे-धीरे उत्तर भारत के प्रमुख राज्य दिल्ली सल्तनत के शासक अलाउद्दीन खिलजी ने जीत लिया। दिल्ली सल्तनत ने गुजरात को नियंत्रित करने के लिए राज्यपालों की नियुक्ति की, लेकिन इसे जबरदस्ती लागू करना पड़ा, विशेष रूप से १३४७ में जब मुहम्मद बिन तुगलक ने 'सूरत' सहित अन्य शहरों को बर्खास्त कर दिया।

१४ वीं शताब्दी के अंत में दिल्ली सल्तनत से नियंत्रण कम होने के कारण, एक स्वतंत्र गुजरात के लिए दबाव बढ़ता गया, जिसकी परिणति तत्कालीन राज्यपाल जफर खान ने १४०७ में स्वतंत्रता की घोषणा के रूप में की। 'सूरत' पर सीधे बागलाना के राजपूत साम्राज्य के रईसों का नियंत्रण था, गुजरात सुल्तानों या दक्कन सल्तनतों के अधीन। हालांकि १५३८ में गुजरात सल्तनत के पतन के बाद, इसे स्थानीय रईसों द्वारा नियंत्रित किया गया, जिसकी शुरुआत चेंगिज़ खान से हुई, जिन्होंने सूरत, ब्रोच, बड़ौदा और चंपानेर पर पूर्ण अधिकार प्राप्त किया था। हालांकि, १६३७ में औरंगजेब ने बगलाना को मुगल साम्राज्य में पूरी तरह से मिला लिया।

१५१४ में पुर्तगाली यात्री डुआर्टे बारबोसा ने 'सूरत' को एक महत्वपूर्ण बंदरगाह के रूप में वर्णित किया, जिसमें मालाबार और दुनिया के विभिन्न हिस्सों से कई जहाज आते थे। १५२० तक शहर का नाम 'सूरत' हो गया था, इसे पुर्तगालियों (१५१२ और १५३०) द्वारा जला दिया गया था और मुगलों (१५७३) ने जीत लिया था। मराठा राजा शिवाजी (१७ वीं शताब्दी) ने दो बार हमला किया था।

'सूरत' मुगल साम्राज्य का सबसे समृद्ध बंदरगाह था। एक समृद्ध शहर होने के बावजूद 'सूरत' मिट्टी और बांस के मकानों और टेढ़ी-मेढ़ी गलियों के साथ एक ठेठ 'गड़बड़' व्यापारियों के शहर की तरह दिखता था। हालांकि नदी के किनारे स्थानीय व्यापारी राजकुमारों और तुर्की, अर्मेनियाई प्रतिष्ठानों से संबंधित कुछ मकान और गोदाम अंग्रेजी, फ्रेंच और डच व्यापारी के थे। जैनियों द्वारा चलाए जा रहे गायों, घोड़ों, मक्खियों और कीड़ों के लिए अस्पताल भी थे। कुछ गलियां संकरी थीं जबकि अन्य पर्याप्त चौड़ाई की थीं। शाम को विशेष रूप से बाज़ार के पास सड़कों पर लोगों और व्यापारियों से अपना माल बेचने की भीड़ लग जाती थी। मुगल काल के दौरान 'सूरत' एक आबादी वाला शहर था। मानसून के मौसम के दौरान, जब जहाज बिना किसी खतरे के बंदरगाहों से आ-जा सकते थे। १६१२ में इंग्लैंड ने 'सूरत' में अपना पहला भारतीय व्यापारिक कारखाना स्थापित किया। 'सूरत' सोने और कपड़े का निर्यात करने वाला भारत का एम्पोरियम बन गया, इसके प्रमुख उद्योग जहाज निर्माण और कपड़ा निर्माण थे। ताप्ती नदी का तट, अथवलाइन से लेकर डुमास तक, विशेष रूप से जहाज बनाने वालों के लिए था, जो आमतौर पर रासी थे। बंबई (वर्तमान मुंबई) के उदय तक यह शहर समृद्ध बना रहा। बाद में 'सूरत' के जहाज निर्माण उद्योग में १८वीं शताब्दी में 'सूरत' में ही धीरे-धीरे गिरावट आई। १७९०-१७९१ के दौरान 'सूरत' में एक महामारी ने १,००,००० गुजरातियों को मार डाला। ब्रिटिश और डच दोनों ने शहर पर नियंत्रण का दावा किया लेकिन १८०० में अंग्रेजों ने 'सूरत' पर नियंत्रण कर लिया।

१९वीं शताब्दी के मध्य तक 'सूरत' लगभग ८०,००० निवासियों के साथ एक स्थिर शहर बन गया, जब भारत का रेलमार्ग **शेष पृष्ठ १३ पर...**

पृष्ठ १२ से ... खुला तो शहर फिर से समृद्ध होने लगा। 'सूरत' से रेशम, कपास, ब्रोकेड और सोने और चांदी की वस्तुएं प्रसिद्ध हुईं और महीन मलमल बनाने की प्राचीन कला को पुनर्जीवित किया गया।

भारत की स्वतंत्रता के बाद:

१५ अगस्त १९४७ को भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद 'सूरत' भारत का हिस्सा बन गया, उस समय यह बॉम्बे स्टेट का हिस्सा था, बाद में यह गुजरात राज्य का हिस्सा बना। मुंबई, अहमदाबाद, पुणे, नागपुर और वडोदरा के साथ 'सूरत' तेजी से बढ़ते शहरों और पश्चिमी भारत के प्रमुख वाणिज्यिक और औद्योगिक केंद्रों में से एक बन गया। स्वतंत्रता के बाद की अवधि के दौरान, 'सूरत' ने व्यापारिक गतिविधियों के साथ-साथ औद्योगिक गतिविधियों विशेष रूप से कपड़ा और रसायन में काफी वृद्धि का अनुभव किया। २ अक्टूबर २००७ को 'सूरत' जिला पुन: संगठन अधिनियम २००७ के तहत एक नया 'ताप्ती' जिला बनाकर 'सूरत' जिले को दो भागों में विभाजित किया गया।

ताप्ती नदी

ताप्ती नदी

'सूरत' एक बंदरगाह शहर है, जो 'ताप्ती' नदी के तट पर स्थित है। 'ताप्ती' के क्षतिग्रस्त होने के कारण मूल बंदरगाह सुविधाएं बंद हो गईं। निकटतम बंदरगाह अब 'सूरत' महानगर क्षेत्र के मगदल्ला और हजीरा क्षेत्र में है, इसका एक प्रसिद्ध समुद्र तट है जिसे हजीरा में स्थित 'डुमास बीच' कहा जाता है। शहर की औसत ऊंचाई १३ मीटर है। 'सूरत' जिला भरूच, नर्मदा, नवसारी से घिरा हुआ है, पश्चिम में खंभात की खाड़ी और आसपास के जिले हैं। जलवायु उष्णकटिबंधीय है और मानसूनी वर्षा प्रचुर मात्रा में होती है (प्रति वर्ष लगभग २,५०० मिमी)। भारतीय मानक ब्यूरो के अनुसार शहर के पैमाने पर भूकंपीय क्षेत्र के अंतर्गत आता है (भूकंप की बढ़ती संवेदनशीलता के क्रम में)।

जलवायु

'सूरत' में उष्णकटिबंधीय सवाना जलवायु, जो समुद्र द्वारा कैंबॉय की खाड़ी तक दृढ़ता से संचालित होती है। गर्मी मार्च की शुरुआत में शुरू होती है और जून तक चलती है। अप्रैल और मई सबसे गर्म महीने होते हैं। औसत अधिकतम तापमान ३७ डिग्री सेल्सियस (९९ डिग्री फारेनहाइट) है। जून के अंत में मानसून शुरू होता है और सितंबर के अंत तक शहर में लगभग १,२०० मिलीमीटर (४७ इंच) बारिश होती है, इन महीनों के दौरान औसत अधिकतम ३२ डिग्री सेल्सियस (९० डिग्री फारेनहाइट) होता है। अक्टूबर और नवंबर में मानसून की वापसी और नवंबर के अंत तक उच्च तापमान की वापसी देखी जाती है। सर्दी दिसंबर में शुरू होती है और फरवरी के अंत में समाप्त होती है।

Madan Lal Bothra
B. Com., F.C.A.
Mob.: 9825140793
9426806170
M. L. Bothra & Co.
CHARTERED ACCOUNTANTS
608, 609, Jeevandeep, 6th Floor, Opp. Sub Jail,
Ring Road, Surat, Gujarat, Bharat-395002
Ph.: (O) 0261-355 5712

Abhishek Agrawal
Mob: 9825110476
SONU CREATIONS
1283/84, Millenium Textile Market,
Ring Road, Surat, Gujarat, Bharat-395002
Email :nisha1979agarwal@rediffmail.com
भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

आओ मिलकर हिंदी का सम्मान करें 'हिंदी' को राष्ट्रभाषा का सम्मान दिलाने की प्रतिज्ञा करें -बिजय कुमार जैन 'हिंदी सेवी'

सूरत के विकास में अग्रवाल विकास ट्रस्ट का सहयोग

सूरतः स्वर्गीय श्री फूलचन्द बंसल ने सूरत के अग्रवाल समाज के समग्र विकास-सामाजिक-आर्थिक-शैक्षणिक-चिकित्सा हेतु १९९० में 'अग्रवाल विकास ट्रस्ट' की स्थापना की। 'अग्रवाल विकास ट्रस्ट' 'सूरत' की एक आईएसओ प्रमाणित गैर-लाभकारी, सार्वजनिक धर्मार्थ ट्रस्ट है, अग्रवाल विकास ट्रस्ट द्वारा पिछले ३२ वर्षों में किये गये सेवा एवं सामाजिक विकास के कार्यों का गौरवशाली इतिहास रहा है। इन ३२ वर्षों में समाज की विभिन्न आवश्यकताओं को ट्रस्ट ने बड़े ही जिम्मेदारी के साथ पूरा किया है। ट्रस्ट के प्रति अग्रवाल बन्धुओं का सहयोग, विश्वास तथा समर्पण अभूतपूर्व रहा है। ट्रस्ट द्वारा निर्माणाधीन महाराजा अग्रसेन भवन का भूमि पूजन समारोह बुधवार २ मार्च, १९९४ को सम्पन्न हुआ। महाराजा अग्रसेन भवन का लोकर्पण शनिवार ५ सितम्बर, १९९८ के दिन सुसंपन्न हुआ।

१७ फरवरी २००० के पावन दिवस पर महाराजा अग्रसेन भवन के प्रांगण में श्री गौरी शंकर मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा समारोह आध्यात्मिक जगत के महान सन्त परम पूज्य सुधांशु जी महाराज के आशिर्वचनों के साथ संपन्न हुआ। ट्रस्ट अभी तक देश के सुप्रसिद्ध योगाचायों के द्वारा कई योग शिबीर लगा चुका है। ट्रस्ट एक सुविधा सह सम्मेलन केंद्र चलाकर 'सूरत' के नागरिकों के लिए सबसे अधिक प्रतिस्पर्धी कीमतों पर आतिथ्य संबंधी सेवाएं प्रदान करने में सक्षम है। सूरत शहर के सिटी लाइट एरिया में एक अनूठा परिसर, महाराजा अग्रसेन भवन, एक प्रसिद्ध मील का पत्थर है। सभी प्रकार की सुविधाओं के साथ सहज आराम के लिए कॉर्पोरेट घरानों, सामाजिक समूहों, गैर सरकारी संगठनों, व्यापार संघों आदि द्वारा इसके वास्तुशिल्प डिजाइन की सराहना की जाती है।

यहां सुविधाओं में अलग-अलग आकार के कमरे छोटे-बड़े हॉल आदि सुविधाओं के साथ एसी कमरे शामिल हैं। एक बार में ३५० से अधिक मेहमानों के लिए अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त है, प्रतिस्पर्धी दरों पर किराये पर दिए जाते हैं।

यहां सभी प्रकार के विवाह-समारोहों, सामाजिक समारोहों का आयोजन किया जाता है। सुविधाएं और बुनियादी ढांचा लगभग पांच सितारा होटल और कन्वेंशन सेंटरों के बराबर है, हर साल मध्य जुलाई से मध्य नवंबर तक ऑफ सीजन छूट का लाभ भी उठाया जाता है।

ट्रस्ट के सामाजिक कार्यः

अग्रवाल विकास ट्रस्ट ने पिछले कुछ वर्ष में मृतक अग्रवाल परिवारों के ८० प्रतिशत मृतकों का नेत्रदान करवाया है। महाराजा अग्रसेन मेडिकल रिसर्च

महाराजा अग्रसेन मेडिकल रिसर्च सोसायटी

सोसायटी की स्थापना की गई है।

'सूरत में महाराजा अग्रसेन उद्यान' सूरत महानगर पालिका एवं अग्रवाल विकास ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में १० हजार वर्ग गज में एक अत्यन्त सुन्दर सार्वजनिक पार्क (उद्यान) बनाने का निश्चय किया गया, इस भव्य पार्क का उद्घाटन १८ अक्टूबर, २००४ को संपन्न हुआ।

समाज की युवा पीढ़ी को बेहतर उच्च शिक्षा प्राप्त हो, इस महान लक्ष्य की पूर्ति के लिए महाराजा अग्रसेन विद्यालय की नींव ३० सितम्बर २०१७ के दिन रखी गई। ट्रस्ट के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित होने वाली यह

महाराजा अग्रसेन इंटरनेशनल स्कूल

उपलब्धि समस्त अग्रवाल समाज का गौरव बढ़ाया है। पूरे गुजरात में महाराजा अग्रसेन जी के नाम पर यह पहला विद्यालय है। यह विद्यालय राष्ट्रीय स्तर पर महाराजा अग्रसेन जी की यशोकीर्ति को बढ़ा रहा है।

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

कुछ अलग ही सुकून मिलता है सूरत की मिट्टी में
और कुछ अलग ही स्वाद है यहां के खाने में
'सूरत' जिला के ऐतिहासिक प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं

Surender Dalmia
Director
Mob. : 9825009894
Dalmia

Prayagraj
DYEING & PRINTING MILLS PVT. LTD.

Plot #. 76, G.I.D.C. Pandesara,
Surat, Gujarat , Bharat-394 21
Tel. : 0261- 2890023 | Fax :0261 2895331
E-mail : prg@dalmiagroups.com
sanjivdalmia@hotmail.com

सूरत जिला की ताकत से पूरा भारत डोलता है
यह हम नहीं हमारा इतिहास बोलता है
सूरत जिला के ऐतिहासिक प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

Ashok Singhal
Mob : 93767 91351, 95106 78841

WORLD'S NO.1 TAIWAN BASED CIRCULAR KNITTING MACHINES

AASHIRWAD TEXTILE MACHINERY
BAIYUAN SINCE 1984

F-1701, Lift No. 24, Raghukul Textile Market, Ring Road, Surat,
Gujarat, Bharat-395002 Ph: 0261-7106925, 4041005, 2341005
Website: www.aashirwadtextilemachinery.com Email: aashirwadmachines@gmail.com
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

हिंदी को जन साधारण की भाषा बनाना है, विदेशी भाषा से हनन को बचाना है-बिजय कुमार जैन

सूरत की प्रसिद्धता योद्धा कर्ण से जुड़ी है

कर्ण, गुमनाम नायक, अपरिहार्य योद्धा, दानवीर, अंगराज और महाभारत के सबसे प्यारे पात्रों में से एक है कि कैसे कृष्ण की सहायता से अर्जुन द्वारा उसे मारा गया था, इसमें कोई संदेह नहीं है कि कर्ण, अर्जुन से बेहतर योद्धा था, जिसने उन्हें उसे हराने के लिए इस तरह की कुटिल रणनीति का सहारा लेने के लिए मजबूर किया।

हालाँकि, बहुत कम लोग जानते हैं कि युद्ध में भारी हार के बाद या उनके अंतिम संस्कार की कहानी के बारे में कर्ण के साथ क्या हुआ था?

कर्ण को अर्जुन द्वारा विभिन्न तरीकों से युद्ध में परास्त करने के बाद, कृष्ण ने खुद को एक ब्राह्मण के रूप में कर्ण से दान मांगकर अंतिम परीक्षा देने को कहा। कर्ण, जो अपनी माँ राधा की गोद में और अपनी पत्नी वृषाली के पास आराम कर रहा था, कहा कि उसके पास दान देने के लिए कुछ भी नहीं है लेकिन कृष्ण ने इसे चतुराई से जवाब दिया कि वह अपने दांतों में से कुछ सोना दे सकता है। कर्ण ने बिना किसी हिचकिचाहट के तुरंत अपने दांतों से सोना तोड़कर ब्राह्मण को सौंप दिया। कृष्ण उसके निस्वार्थ कार्य से अभिभूत हुए और उन्हें वरदान दिया। पहले तो कर्ण ने कहा कि उन्हें किसी चीज की जरूरत नहीं है, लेकिन कृष्ण के आग्रह पर उन्होंने अनुरोध किया, हे माधव, मैं सूर्य और कुंवारी माता कुंती (कुंवारी माता) का पुत्र हूं, कृपया मेरा अंतिम संस्कार एक कुंवारी भूमि (जहां किसी ने कभी कदम नहीं रखा)' वहां किया जाए। कृष्ण ने मुस्कान के साथ उसकी इच्छा स्वीकार कर ली और ऐसी भूमि की खोज करने लगे, कड़ी खोज के बाद उन्हें वर्तमान सूरत (गुजरात) के पास ताप्ती नदी के तट पर सुई की नोक के बराबर जमीन का एक टुकड़ा मिला, जहाँ अंततः कर्ण का अंतिम संस्कार किया गया।

पांडव यह जानकर बहुत दुखी हुए कि कर्ण वास्तव में माता कुंती से उनके बड़े भाई थे, उन्हें संदेह था कि क्या चुनी गई भूमि वास्तव में अछूती थी, यह वास्तव में मेरी बहन ताप्ती के तट पर एक कुंवारी भूमि है (क्योंकि ताप्ती नदी सूर्य, सूर्य देव की पुत्री है) और मेरे भाई अश्विन और कुमार भी मौजूद हैं।

तब पांडवों ने कृष्ण से पूछा कि लोग कैसे जानेंगे या विश्वास करेंगे कि यह वास्तव में कुंवारी भूमि है? इस पर कृष्ण ने उत्तर दिया कि एक 'तीन पत्ती' वाला बरगद का पौधा होगा, जो इस भूमि की निशानी होगी और जो कोई भी इस वृक्ष का सम्मान करेगा, दानी कर्ण की कृपा से उनकी मनोकामनाएं पूरी होंगी।

यहाँ कुछ और भी है, जिन लोगों ने इस भूमि का दौरा किया उन्होंने देखा है कि 'तीन पत्ती' वाले बरगद का पौधा समय के साथ नहीं बढ़ रहा, इसकी लंबाई युगों से एक समान बनी हुई है। सबसे आश्चर्यजनक बात यह है कि तीन में से एक पत्ता अक्सर पौधे से गिर जाता है और एक नया फिर से अंकुरित हो जाता है। हालांकि कोई नहीं जानता कि पौधा कंटेनर में बंद होने के बावजूद पुराना पत्ता कहां गायब हो जाता है, क्योंकि पत्ती केवल रात के समय ही गिरती है। माना जा सकता है कि यह हवाओं के कारण बह सकता है लेकिन सवाल यह है कि हर बार, हर पतझड़ के मौसम में और सिर्फ एक पत्ता ही क्यों? यह कुछ अप्राकृतिक है और किसी तरह अगर हम इस कारक पर विचार नहीं करते हैं तो इसका कोई तार्किक जवाब नहीं है कि नदी के पास होने के बावजूद जहां मिट्टी उपजाऊ और खनिजों और पोषक तत्वों से भरी है, पौधे आगे क्यों नहीं बढ़ रहे हैं। यह पौधा एक पिंजरे से घिरा हुआ है ताकि कोई इसे नुकसान न पहुंचा सके। (हालांकि तकनीकी रूप से यह अब कुंवारी नहीं है लेकिन यह निश्चित रूप से पवित्र है) इसे आप यहाँ देख सकते हैं।

बहुत से स्थानीय लोगों से, यहां तक की मंदिर के पुरोहित से भी पौधे की लंबाई के बारे में पूछा गया, उन्होंने उत्तर दिया कि वे पिछले ३२ वर्षों से नियमित रूप से पौधे का निरीक्षण कर रहे हैं लेकिन पौधे की कोई वृद्धि नहीं देखी गई, यहां तक कि सेंटीमीटर तक भी नहीं। ज्यादातर यह 'तीन पत्ती' मंदिर और चार धाम मंदिर के रूप में प्रसिद्ध है। जय भारत!

धर्म, कला और संस्कृति का खूबसूरत संगम है,
यहां होता देवी देवताओं का अद्भुत मिलन है
सूरत जिला के ऐतिहासिक प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं

सभी भारत-वासियों को दीयों का पर्व दीपावली पर
हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई

Shashibhushan Chhabil Das Jain
Mob. : 9825113782
Mukesh Chhabil Dass Jain
Mob. : 9913833000
SUMATI PRINTS PVT. LTD
● Office ●
424/425, Gidc, Pandesara, Surat, Gujarat, Bharat-394221
Ph.: 0261-2892976 | email: sumatiprints@yahoo.in
● Residence ●
A-601, Sangini Solitiare Nr. Rajhans Zion,
Can L Road, Vesu, Surat, Bharat-395007

भारत का प्रसिद्ध टेक्सटाइल मार्केट सूरत...

सूरत टेक्सटाइल मार्केट भारत में एक प्रसिद्ध टेक्सटाइल मार्केट है। टेक्सटाइल इन्फोमीडिया सबसे व्यापक इंटरनेट डायरेक्टरी है, यह सूची आपको शहर में बाजार, जो कि निस्संदेह आपको सूरत टेक्सटाइल मार्केट से जानने में सहायता करता है। बाजार में हजारों कपड़ा व्यापारी हैं जो कि 'सूरत' के कपड़ा क्षेत्र में अग्रणी थोक व्यापारी और निर्माता हैं, सभी थोक कपड़ों, थोक साड़ियों और कपड़े के विशेषज्ञ हैं। टेक्सटाइल मार्केट में हजारों स्टोर और व्यापारी हैं। व्यावसायिक निर्देशिका से उनके संपर्क, जानकारी, पते, मोबाइल नंबर और दुकान के नाम का पता लगा सकते हैं। 'सूरत' के सबसे महत्वपूर्ण कपड़ा बाजारों की एक सूची तैयार की गई है।

सूरत में सबसे प्रसिद्ध परिधान

रेशम सूरत के सबसे लोकप्रिय कपड़ों में से एक है। 'सूरत' रेशम आपूर्तिकर्ता विभिन्न प्रकार के रेशमी कपड़े की गुणवत्ता प्रदान **शेष पृष्ठ १८ पर...**

कुछ अलग ही सुकून मिलता है सूरत की मिट्टी में
और कुछ अलग ही स्वाद है यहां के खाने में
'सूरत' जिला के ऐतिहासिक प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं

Authorised Distributors

POLYCAB
Connection Zindagi Ka

Cosmo Electricals

"COSMO HOUSE" M.G. Road, Road No. 4, Udhna,
Surat, Gujarat, Bharat- 394210 | Ph.:0261-2158921-22
E-mail : info@cosmoelectricals.com
www.cosmoelectricals.com
Mob. : 9825158922/9825158925

हमारे देश की पहचान है हिंदी और हमारा अभिमान है हिंदी-बिजय कुमार जैन

पृष्ठ १७ से ... करते हैं। रेशमी कपड़े का उपयोग कपड़ों की एक विस्तृत श्रृंखला बनाने के लिए किया जाता है, जिसमें कपड़े, घरेलू वस्त्र शामिल हैं।

पॉलिएस्टर और विस्कोस, अन्य वस्त्रों के लिए शहर बहुत लोकप्रिय है। सूरत के कपड़ा थोक व्यापारी अपने खरीदारों को उच्च गुणवत्ता वाले कपड़े प्रदान करते हैं।

सूरत कपड़ा बाजार का आकार

सूरत का कपड़ा बाजार देश के सबसे बड़े बाजारों में से एक है। कपड़ा बाजार में ६५०,००० पावरलूम हैं, जिसमें शहर में १५०००-२००००० कपड़ा थोक व्यापारी काम करते हैं। सूरत में २०,००० कपड़ा निर्माताओं की आबादी है, जिसमें १०,००० बुनकर, ७५,००० डीलर, ९५५० कपड़ा प्रसंस्करण इकाइयां और ४५०,०००-६००,००० कढाई मशीनें शामिल हैं। सूरत के कपड़े का बाजार अनुमानित रूप से रु. ५०० अरब है। कपड़ों की खरीदारी के लिए 'सूरत' का कपड़ा बाजार एक बेहतरीन जगह है।

सूरत जिला है सबसे निराला
यहां है दांडी, डुमास, हजीरा, तीथल, उभरात हमारा
सूरत के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

Vinayakk Guptaa
Partner
Mob : 9825100574
Euphoria® PACKAGING LLP
Block A 3, Survey # 396 Paiki-4, GSL Nova Compound, Moraiya Village, Sarkhej Bavla Highway, Ahmedabad, Gujarat, Bharat - 382213
email: vinayak@euphoriapack.com
website: www.euphoriapack.com
भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

सूरत थोक बाजार में क्या बिकता है?

'सूरत' लेडीज ड्रेस होलसेल मार्केट खरीदारों को महिलाओं के कपड़ों और कपड़ों के विविध चयन प्रदान करता है। 'सूरत' के होलसेल कपड़ा बाजार से, आप एथनिक और वेस्टर्न वियर की एक विस्तृत श्रृंखला पा सकते हैं। 'सूरत' के कपड़ों का बाजार खरीदारों को चुनने के लिए उच्च गुणवत्ता वाले कपड़ों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करता है। खरीदार 'सूरत' ड्रेस मार्केट में अपने पसंदीदा कपड़ों के बेहतरीन बाजारी कर सकते हैं। 'सूरत' में कपड़ों की कीमतें सबसे कम हैं, यहां के थोक व्यापारी आपको अपनी पसंद का सामान और वस्त्र न्यूनतम कीमत पर उपलब्ध कराते हैं।

सूरत मार्केट में सर्वाधिक बिकने वाली साड़ियाँ

'सूरत' कपड़ा बाजार थोक खरीदारों को सबसे अच्छा कपड़ा खरीदने के मौका देता है। साड़ी थोक उद्योग आपको उच्च गुणवत्ता वाली साड़ियाँ प्रदान करता है। 'सूरत' के साड़ी थोक विक्रेता कई तरह की स्टाइलिश और आकर्षक साड़ी डिजाइन पेश करता है। 'सूरत' का कपड़ा बाजार उच्च गुणवत्ता वाले कपड़े बेचता है, जिसका उपयोग विभिन्न प्रकार की साड़ियों को बनाने के लिए किया जाता है। 'सूरत' के कपड़ा उद्योग की साड़ियाँ पूरे भारत में अपनी पहचान रखता है।

डुमास रोड

यदि आप अपने कपड़े विशेष रूप से मॉल से खरीदना पसंद करते हैं तो डुमास रोड आपके लिए सबसे अच्छी जगह है। यह सूरत के शीर्ष २० प्रसिद्ध बाजारों में से एक है। स्थानीय ब्रांड और अन्य बड़े नाम मॉल में उपलब्ध हैं, इसलिए आपके पास चुनने के लिए बहुत सारे विकल्प होते हैं, चाहे वह ब्रांड हों या कुछ और। डुमास शॉपिंग सेंटरों में राहुल राज मॉल, वीआर मॉल और इस्कॉन मॉल शामिल हैं, इन मॉल के परिणामस्वरूप डुमास पूरे वर्ष आगंतुकों को आकर्षित करता है। विभिन्न चीजों को खरीदने के अलावा आप आराम करने के साथ और कॉफी या शेक, भोजन या अन्य सामान ले सकते हैं, विकल्पों की सूची के साथ 'डुमास' एक खूबसूरत जगह है।

सहारा दरवाजा

सूरत आपकी खरीदारी के लिए एक उत्कृष्ट स्थान है, जब आप शहर में हों, तो सबसे अच्छे कपड़ों के लिए सहारा दरवाजे पर जाएं, यह स्थान अपने कपड़ा बाजार के लिए जाना जाता है, माल की उच्च गुणवत्ता इसे आपके लिए

एक आदर्श स्थान बनाती है। सूरत टेक्सटाइल मार्केट दरवाजे के दक्षिण में स्थित है और उत्पादों का एक विस्तृत चयन प्रदान करता है, जिसमें सलवार कमीज, कढ़ाई के कपड़े आदि बहुत कुछ शामिल हैं। **शेष पृष्ठ २० पर...**

सूरत में सरदार पटेल संग्रहालय

सरदार पटेल संग्रहालय सूरत में एक राष्ट्रीय संग्रहालय है, जिसकी स्थापना १९७८ में श्री बाबूभाई जसभाई पटेल ने की थी, यह शाहीबाग में स्थित है, यह संग्रहालय ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, इस संरचना का निर्माण १६२२ में प्रसिद्ध राजा शाहजहाँ के लिए करवाया गया था, बाद में इस संरचना को अंग्रेजों ने जीत लिया, जिन्होंने इसे अपना निवास स्थान बना लिया। प्रसिद्ध बंगाली कवि रवींद्रनाथ टैगोर यहां कुछ समय के लिए रुके थे, जब भारत को स्वतंत्रता मिली, तो यह संरचना १९७८ में गुजरात राजभवन (गवर्नर का महल) बन गया, बाद में इस संरचना को सरदार वल्लभभाई पटेल के सम्मान में एक राष्ट्रीय स्मारक में बदल दिया गया, इस संग्रहालय में ३डी साउंड, लाइटिंग और लेजर डिस्प्ले भी कार्यरत हैं।

सरदार पटेल स्टैच्यू ऑफ यूनिटी

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी स्वतंत्र भारत के पहले गृह मंत्री लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल को समर्पित है। सरदार पटेल को स्वतंत्र भारत के सभी ५६२ रियासतों को भारत गणराज्य में शामिल करने का श्रेय दिया जाता है, इसी वजह से इस मूर्ति को स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के नाम से जाना जाता है। यह स्मारक चीन के स्प्रिंग टेम्पल बुद्ध प्रतिमा से २३ मीटर लंबा है और संयुक्त राज्य अमेरिका में स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी की ऊंचाई से लगभग दोगुना है, जो ९३ मीटर है। 'सूरत' से कुछ ही कि. मी. दुरी पर स्थित हैं सरदार पटेल की यह मूर्ति स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर से विदेशों में पर्यटकों को आकर्षित करती है।

धर्म, कला और संस्कृति का खूबसूरत संगम है,
यहां होता देवी देवताओं का अद्भुत मिलन है
सूरत जिला के ऐतिहासिक प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं

RANVIRSEN GOYAL
Mob. : 9825114616

STAR MINT FIELDS PVT. LTD

806, Trividh Chembers, Ring Road,
Surat, Gujarat, Bharat-395002
Phone : 0261-230 2164

कोई भी राजनीतिक कारण कितने ही प्रबल क्यों न हों, 'हिन्दी' भाषा के इस उत्थान में आड़े आने नहीं देना चाहिए - बिजय कुमार जैन

सूरत में चिंतामणि पार्श्वनाथ जैन मंदिर

'सूरत' के सबसे पुराने जैन मंदिरों में से एक चिंतामणि मंदिर १६९९ ईस्वी में औरंगजेब के शासन के दौरान बनाया गया था। यह 'सूरत' के मोराजी नगर क्षेत्र में स्थित है, जो लगभग शहर के मध्य में है और इसलिए 'सूरत' के किसी भी हिस्से से आसानी से पहुंचा जा सकता है। १२वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान कुमारपाल नामक एक राजा का शासन था, वे सोलंकी वंश के थे और उन्होंने आचार्य हेमचंद्रजी को अपना सलाहकार बना रखा था। आचार्य एक जैन उपदेशक, कवि और दार्शनिक थे। कुमारपाल के शासन में राज्य में समग्र समृद्धि थी। कहा जाता है कि चिंतामणि मंदिर का निर्माण कुछ महान लोगों के सम्मान में किया गया था।

चिंतामणि जैन मंदिर बाहर से बहुत ही साधारण दिखता है, लेकिन अपनी रचनात्मकता और कौशल के साथ आगंतुकों को आश्चर्यचकित करता है, यहां लकड़ी पर जटिल और खूबसूरती से नक्काशीदार डिजाइन हैं। छत पर प्राकृतिक वनस्पति रंग से बने चित्रों में आचार्य हेमचंद्रजी, राजा कुमारपाल और अन्य सोलंकी राजाओं को दर्शाया गया है। धार्मिक पूजा स्थल होने के साथ ही यह जैन मंदिर १७वीं शताब्दी की कला का नमूना भी है। यह धार्मिक, ध्यानपूर्ण, कलात्मक और ऐतिहासिक अनुभव के साथ एक स्वच्छ, सुव्यवस्थित और शांतिपूर्ण मंदिर है।

धर्म, कला और संस्कृति का खूबसूरत संगम है,
यहां होता देवी देवताओं का अदभुत मिलन है
सूरत जिला के ऐतिहासिक प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

Alok Kumar Chauthmal Mittal
Mob. : 9824149421
Dropadi Fabrics
A/3/4010, Rejent Textile Market,
Near Ambaji Market, Ring Road, Surat,
Gujarat , Bharat- 395002 Ph. : 0261-2321849
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

पृष्ठ १८ से... सहारा दरवाजे में साड़ियों का एक बाजार है।

शनिवार मार्केट (बाजार)

यह बाजार मकाई पुल के पास है। यह बाजार घरेलू साज-सज्जा और प्राचीन वस्तुओं के किफायती चयन के लिए प्रसिद्ध है। यह बाजार हमेशा लोगों से गुलजार रहता है, घर की सजावट के प्रशंसकों से भरा रहता है। प्राचीन लैंप, कलाकृति, शो-पीस, मिट्टी के बर्तन, जूते, पुरुषों, महिलाओं और बच्चों के लिए कपड़े, घर के लिए कई आवश्यक सामान या दैनिक जीवन के लिए महत्वपूर्ण सामान यहां उपलब्ध हैं। उपलब्ध विकल्पों और प्रत्येक उत्पाद मूल्य आधार पर हर शनिवार को सूरत के शीर्ष २० प्रसिद्ध बाजारों में से एक है।

ओल्ड बॉम्बे मार्केट

कपड़ों की खरीदारी करने वालों के लिए 'सूरत' एक पसंदीदा स्थान होने के लिए जाना जाता है। ओल्ड बॉम्बे मार्केट, सहारा दरवाजा की तरह कपड़ा संग्रह के लिए जाना जाता है। ओल्ड बॉम्बे, जिसे 'सूरत' के सबसे अच्छे थोक बाजार के रूप में भी जाना जाता है, उच्च गुणवत्ता की जगह है। यहां सभी प्रतिष्ठान उच्च गुणवत्ता वाले सामान बेचते हैं।

चौटा बाजार

यह सूरत के सबसे पुराने बाजारों में से एक है, यहां लगभग सब कुछ यानी खाने से लेकर कपड़ा वस्त्रों तक यह विशाल बाजार आपकी सभी जरूरतों के लिए वन-स्टॉप शॉप है। यहां गहने, कपड़े, सौंदर्य प्रसाधन और कटलरी सहित सब कुछ उपलब्ध होता है। एक समय था जब चौटा बाजार को 'सूरत' के सबसे अच्छे हीरे के बाजार के रूप में जाना जाता था, जिसमें विभिन्न ज्वेलरी स्टोर थे, हालाँकि अब आप यहाँ के सूरत कपड़ा बाजार थोक मूल्य का लाभ ले सकते हैं।

अंबिका निकेतन मंदिर सूरत

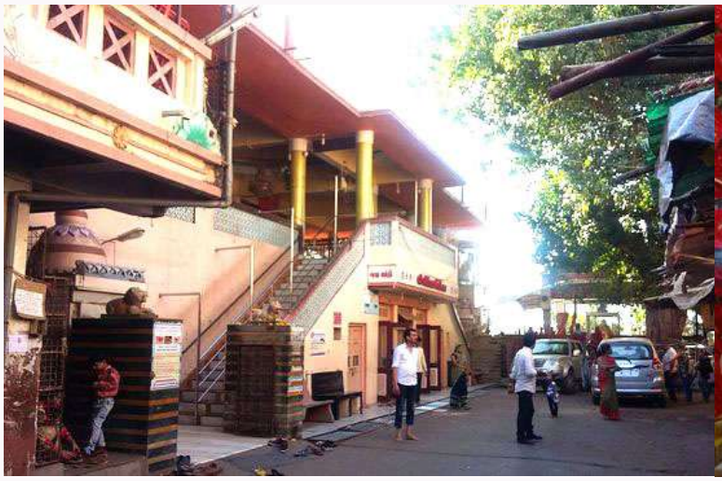

सूरतः अंबिका निकेतन मंदिर 'सूरत' में तापी नदी के किनारे स्थित है। १९६९ में बनी इस दो मंजिला संरचना में शक्ति के अवतार अष्टभुजा अंबिका की मूर्ति है। देवी अंबिका के अष्टभुजा हैं, जिसका अर्थ है आठ हाथ, जो कि एक सुंदर साड़ी में लिप्त है, जो अपने सभी अनुयायियों को आशीर्वाद देने के लिए मधुर मुस्कान से स्वरचित है। भक्त साल भर आते हैं, लेकिन त्योहारों के समय, विशेष रूप से नवरात्रि में, मंदिर एक विशेष रूप धारण कर लेता है और पूरे 'सूरत' व बाहर से लोगों की भीड़ उमड़ पड़ती है। भगवान राम, देवी सीता, भगवान शिव और भगवान लक्ष्मीनारायण के छोटे मंदिर भी स्थापित हैं।

सूरत जिला के ऐतिहासिक प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं

GAURAV PAGARIA
MOB. : 9825362731
GSP
G. S. Pagaria Tex
A TRUSTED NAME FOR QUALITY SHIRTING FABRICS
S-2206-07, Hariom Market-4, Ring Road,
Surat, Gujarat, Bharat-395002
Ph. : 0261-3104270
भारतीय भाषा को अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान

भारतीय संस्कृति का परम पावन त्यौहार
दीपावली पर हार्दिक शुभकामनायें
SHANTILAL B. JAIN
भ्रमणध्वनि : 8879047947
Max Fresh
A HOUSE OF STAINLESS STEEL HOTPOTS
MAX FRESH
SHREE VALLABH METALS
Manufacturers of High Quality Insulated Stainless Steel Casserole

5, Shree Ganesh Industrial Estate, Opp. Old Syndicate Bank,
Bhayandar East, Dist.-Thane, Maharashtra,Bharat - 401101
Ph. : 022-28150407/28150304/28195500
e-mail : info@shreevallabh.co.in / Website : www.maxfresh.co.in
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

यदि बढ़ाना है देश को विकास की ओर, तो दें हिंदी भाषा पर जोर-बिजय कुमार जैन

सूरत में स्वामीनारायण मंदिर

सूरतः का स्वामीनारायण मंदिर एक प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है, यह मंदिर सूरत में सरदार ब्रिज के पास है। यह मंदिर मंत्रमुग्ध कर देने वाला है, इस मंदिर में मूर्तियां हैं जो मंदिर की दीवारों पर की गई हैं। मंदिर का शिखर भी काफी आकर्षक है। भगवान श्री स्वामीनारायण, श्री गोपालानंद स्वामी, श्री गुणातीतानंद स्वामी, श्री हरिकृष्ण महाराज, श्री कृष्ण, श्री राधा रानी जी और घनश्याम जी महाराज आदि सभी मंदिर में पाए जा सकते हैं, उनकी मूर्ति गर्भ गृह में देखी जा सकती है जो कि काफी प्यारी है।

मंदिर ताप्ती नदी के तट पर बनाया गया है। यहां से ताप्ती नदी का भी खूबसूरत नजारा दिखता है। मंदिर में आवास भी बने हुए हैं, यदि आप एक पर्यटक हैं, तो यहां ठहरने के लिए आपका स्वागत है। सात्विक भोजन परोसने वाला एक रेस्तरां भी है, जो काफी बेहतरीन है। मंदिर आगंतुकों के लिए खुला है।

धर्म, कला और संस्कृति का खूबसूरत संगम है
यहां होता देवी देवताओं का अद्भुत मिलन है
सूरत जिला के ऐतिहासिक प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

RAKESH DUGAR
Mob. : 90992 07997
Shree Suswani Motors
THE COMPLETE AUTO SOLUTION
Shop No. 6-7-8-9, Subh Square,
Patelwadi Lal Darwaza, Surat,
Gujarat, Bharat-395004

सूरत में दुम्मस बीच

सूरत का यह बीच गुजरात के कई बेहतरीन स्पॉट्स में से एक है। यह भारत में प्रेतवाधित स्थलों की सूची में एक प्रसिद्ध स्थान रखता है। यह समुद्र तट 'सूरत' से २१ किलोमीटर दक्षिण पश्चिम में स्थित एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है, जहां आगंतुक आसपास के प्राकृतिक परिवेश की शांति और सुंदरता की सराहना करने के लिए एकत्रित होते हैं। अपने परिवार, या दोस्तों के साथ इस समुद्र तट पर जा सकते हैं, लेकिन सूर्यास्त से पहले यह स्थल छोड़ना होता है, क्योंकि सूर्यास्त के बाद चीखने और रोने की खबर मिलती है। समुद्र तट का अद्भुत पहलू यह है कि इसके चारों ओर सिर्फ काली रेत है, इसलिए इसे काला समुद्र तट भी कहा जाता है।

कहानियों को सुनना किसे पसंद नहीं है जिनमें नाटक का संकेत है, रोमांच का स्पर्श है, कहते हैं यहां सैकड़ों भूत हैं, यह कहानी सुरत के 'दुम्मस' बीच से जुड़ी है, जिसके बारे में बहुतों को पता नहीं, जब भारत में सबसे प्रेतवाधित स्थानों की बात आती है तो आम तौर पर भानगढ़ और कुलधरा (राजस्थान में) और दिल्ली में अग्रसेन की बावली सूची में आता है, हालांकि 'दुम्मस' बीच की कहानी भी उतनी ही यथार्थवादी नहीं है।

सूरत में गलतेश्वर महादेव मंदिर

सूरत का गलतेश्वर महादेव मंदिर एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है, इस मंदिर का निर्माण सूरत जिले के कामरेज तालुका के टिम्बा गांव में ताप्ती नदी के तट पर किया गया एक धार्मिक स्थान है। मंदिर में भगवान शिव की पूजा की जाती है, यहां लोग शिव भगवान जी के दर्शन के लिए आते हैं। यहां भगवान शिव की विशाल प्रतिमा है, यह प्रतिमा करीब १०० फीट ऊंची है, एक प्यारी सी मूर्ति है जो खुली हवा में विराजमान है। १२ ज्योतिर्लिंग भी देखे जा सकते हैं।

सूरत में डच गार्डन

सूरत में डच गार्डन नानपुरा में एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है। अपनी लुभावनी सुंदरता के अलावा इस पार्क का समृद्ध इतिहास भी आगंतुकों को आकर्षित करता है। उद्यान यूरोपीय शैली में बनाया गया है और पश्चिमी संस्कृति का स्वाद प्रदान करता है। ताप्ती नदी बगीचे की सीमा के साथ बहती है और शाम और सुबह की सैर के लिए बेहद खूबसूरत और बेहतरीन है। पहले डच गार्डन क्षेत्र अंग्रेजी और डच निवासियों के लिए एक विश्राम स्थल के रूप में कार्य करता था, इस पार्क का एक आकर्षक इतिहास है, देश की आजादी से पहले कई अंग्रेजी और डच व्यापारी 'सूरत' आए और व्यापार शुरू किया, उन्होंने अपनी फर्म को यहां ही स्थापित किया, जिसे आज डच गार्डन के नाम से जाना जाता है।

सिद्धनाथ महादेव मंदिर सूरत

सिद्धनाथ महादेव मंदिर सूरत के पास कादिफालिया, दुम्मस में बहुत लोकप्रिय और प्राचीन भगवान शिव मंदिर है। शांतिपूर्ण परिवेश के साथ आवश्यक सुविधाओं के साथ मंदिर परिसर को अच्छी तरह से बनाए रखा गया है। हर सोमवार, सावन का महीना और महा शिवरात्रि को यहां घूमने का सबसे अच्छा समय है, जब शिवजी के बहुत सारे भक्त पूजा के लिए आते हैं। शिवलिंग सटीक सकारात्मक ऊर्जा के साथ ऐतिहासिक है जो आपके मन को शांति प्रदान करता है। यह भी कहा जाता है कि औरंगजेब के सैनिकों द्वारा पवित्र मंदिर को नष्ट करने की कोशिश करने के समय शिवलिंग से निकले मधु मक्खियों ने सभी को भगा दिया था।

With Best Compliments

From Surat

सूरत श्री संघ का उद्भव और विकास

'सूरत' सूर्य पुत्री ताप्ती नदी के तट पर बना गुजरात का औद्योगिक नगर है, यह सिर्फ भारत में ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध शहर है। जैन आगमों में 'सूरत' का नाम सूर्य पुत्र के रुप में मिलता है।

धार्मिक दृष्टि से सूरत आध्यामिक नगरी है। यहाँ अहिंसा का सिंहनाद है तो आत्मीय भाव भी है। वीर और बलिदानी लोगों की प्रसव भूमि है तो संत योगी तपस्वी साधकों की साधना की सुवास है।

ओद्योगिक दृष्टि से यह शहर विश्व का सबसे बड़ा डायमण्ड कटिंग उद्योग का क्षेत्र है, जरी उद्योग में अग्रणी है, आर्ट सिल्क कपड़े का उत्पादन विश्व विख्यात है।

इस शहर की बनावट, बसावट स्वच्छ एवं नयनाभिराम है। लम्बी चौड़ी सड़कें, ऊँची-ऊँची अट्टालिकाएँ, भव्य भवनों के स्थापत्य का सौन्दर्य अनायास ही ध्यान आकर्षित कर लेता है, यहाँ मूल निवासी कम हैं और प्रवासी अधिक हैं। समिश्रित लोगों का वास है।

सूरत श्री संघ के प्रथम अध्यक्ष शान्तिलाल साँखला एवं मंत्री प्रकाश जी सुराणा सर्व-सम्मति से मनोनीत हुए। संघ के उद्भव के साथ ही संघ विकास की यात्रा प्रारम्भ हो गयी। सर्वप्रथम संघ सदस्यों को जोड़ने का कार्य प्रारम्भ हुआ, शनैः-शनैः संख्या में बढ़ोत्तरी होती गयी। सन् १९९३ में आचार्य श्री नानेश की आज्ञानुवर्ती महाश्रमणी रत्ना इन्द्रकुँवरजी म.सा. की सुशिष्या श्री गंगावतीजी म.सा., ललितप्रभाजी म.सा., विशालप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा १२ के साथ सूरत श्री संघ को प्रथम चातुर्मास प्राप्त हुआ, यह चातुर्मास उधना के मेवाड़ भवन में त्याग, तपस्या श्रद्धा, समर्पणा एवं हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। चातुर्मास में श्रावक समाज में संघ के प्रति समर्पणा, धर्म के प्रति जागरणता की अनुभूति की गयी। धर्म आराधना के लिए समता भवन बनाने का विचार भी बना। जनवरी २०१४ में समता भवन का उद्घाटन हुआ। उद्घाटन के बाद सूरत का प्रथम चातुर्मास चतुर्विध संघ के रुप में हुआ।

संघ का विकास व्यक्ति विशेष से नहीं होता, संगठन की आवश्यकता होती है। सूरत श्री संघ, समता महिला मण्डल एवं समता युवा संघ के तीनों संगठन एक-दूसरे की उन्नति एवं प्रगति में सहायक रहते हैं। 'सूरत' के तीनों संगठनों में समन्वय का सुवास है, संघ के कार्यों को आपस में बाँटकर अपनी नैतिक जवाबदारी समझकर पूर्ण करने में तन, मन और धन आवश्यकतानुसार समर्पित करते हैं, इसलिए संघ में समता शाखा नियमित रुप से चालू है। समता पाठशालाओं का संचालन अभूतपूर्व चल रहा है। समता भवन में समता पाठशाला के बच्चों को शहर के विभिन्न क्षेत्रों से लाने एवं पहुँचाने की जवाबदारी युवा संघ के कार्यकर्ता संभालते हैं। समय-समय पर शिविरों का आयोजन, विशेष तिथियों पर मानव सेवा के कार्य, नये बसावट के लोगों को संघ से जोड़ने का प्रयास और प्रत्येक चातुर्मास को सभी एकजुट होकर सफल बनाने का प्रयास कार्य एकरुपता का परिचायक है।

सूरत संघ का विकास सिर्फ 'सूरत' तक ही सीमित नहीं रहा। सूरत संघ के प्रतिभा सम्पन्न सुश्रावकों ने अपने प्रज्ञा और हुनर से राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी सेवायें प्रदान कर सहनशीलता एवं तेजस्विता का परिचय दिया है।

- इन्दरचन्द बैद
पूर्व संपादक 'श्रमणोपासक'

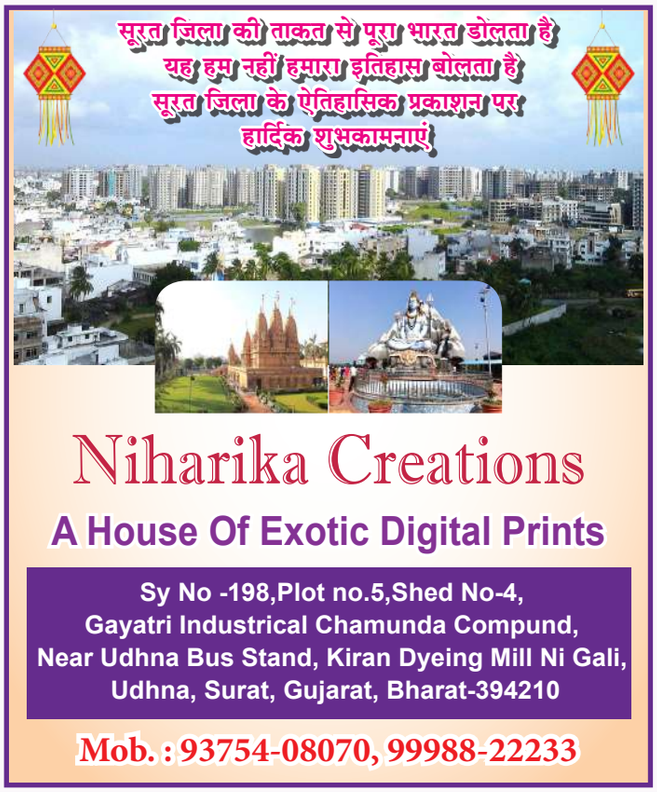

सूरत में श्री गणेश मंदिर

श्री गणेश मंदिर 'सूरत' का एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल है। विशाल गणेश प्रतिमा को देखने के लिए यहां लोग इकट्ठा होते हैं। भगवान शिव की मूर्ति, जिसे मंदिर के ऊपर रखा गया है, को यहां देखा जा सकता है। गणेश प्रतिमा को देखने के साथ मंदिर के अंदर माउस भी देखा जा सकता है। मंदिर को बारीकी से बनाया गया है। मंदिर सूरत के पालनपुर पाटिया में स्थित है। यह सूरत का एक प्रसिद्ध मंदिर है। आप यहां से साईं बाबा और मां काली मंदिर भी देख सकते हैं।

सूरत में दांडी बीच

अपने इतिहास के कारण, दांडी बीच सूरत के सबसे अधिक देखे जाने वाले स्थलों में से एक है, यह स्थान भारत के ऐतिहासिक मुक्ति आंदोलन से जुड़ा है, इसी समुंदर के किनारे से महात्मा गांधी ने 'नमक सत्याग्रह' आंदोलन शुरू किया था। हालाँकि समकालीन यह समुद्र तट एक लोकप्रिय पर्यटक आकर्षण बन गया है, जहाँ आगंतुक सूरत और सिंधु नदी के सुंदर वातावरण का आनंद लेने आते हैं। तट के किनारे कई शांत स्थान हैं जहाँ आप आराम कर सकते हैं और सूर्यास्त और सूर्योदय देख सकते हैं।

कुछ अलग ही सुकून मिलता है सूरत की मिट्टी में
और कुछ अलग ही स्वाद है यहां के खाने में
सूरत जिला के ऐतिहासिक प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं

Bhagirath Panpalia
Mob. : 9825950120

Jagdish (Pappubhai)
(Director)
Mob. : 93768 90004, 95104 82011

RAGHAV FASHION PVT. LTD.

Plot No. 83, Bagumra Village, Jolwa Patia, Kadodara,
Bardoli Road, Surat, Gujarat, Bharat-394327
Ph: (02622) 272073, 272093 | Fax : 02622-271040

यदि मुझे विश्वास हो जाये कि 'हिन्दी' राष्ट्रीय एकता में बाधक है, तो मैं 'हिन्दी' को सदा के लिए राष्ट्रभाषा पद से हटा लेने का प्रस्ताव करूँगा - सेठ गोविन्ददास

सूरत के विकास में माहेश्वरी परिवारों का योगदान

भारत ही नही अपितु पूरे विश्व में ''सूरत'' डायमंड व सिल्क सीटी के नाम से अपना विशिष्ट स्थान रखता है, इस अकल्पनीय विकासशील औद्योगिक नगर के विकास में माहेश्वरी समाज का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। माहेश्वरी भवन, माहेश्वरी स्कूल, माहेश्वरी डायलेसिस सेंटर, शीतल जल प्याऊ एवं सुलभ शौचालय बनाकर नगर सुविधा में माहेश्वरी समाज ने महत्वपूर्ण सहयोग दिया है।

'सूरत' का अति विशाल माहेश्वरी समाज परस्पर संगठित एवं एक कड़ी में जुड़ा रहे, इस हेतु माहेश्वरी मैरिज ब्यूरो भी सतत कार्यरत है। संस्था का एकमात्र लक्ष्य सदैव रहा सभी परिवारों की आपसी जानकारी रहे, बाहर से आये हुए समाज बंधु जरूरती समय में सूरत शहर व माहेश्वरी समाज की जानकारी प्राप्त कर सके। सूरत माहेश्वरी समाज की विशालता व शहर के बढ़ते क्षेत्र को देखते हुए सभी माहेश्वरी परिवार आपसी सम्पर्क में समाज के विवाह योग्य लड़के एवं लड़कियों की जानकारी अभिभावकों द्वारा दिए गये परिचयपत्र द्वारा निःशुल्क उपलब्ध कराई जाती है। संस्था समाज के विवाह योग्य प्रत्याशियों का परिचय सम्मेलन का आयोजन भी समय-समय पर करती रहती है।

- रामअवतार साबू
सूरत

सूरत जिला के ऐतिहासिक प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं

Nemichand Jangid
Mob. : 9998120003

MANAS TRENDZ

Mfrs. of Exclusive Fancy Print Dress Materials & Mix N Match

555-556, Shree Sai Ram Textile Market,
Opp. Jash Market, Ring Road, Surat,
Gujarat, Bharat-395002 | Ph.: 0261-2334555
email: manastrendz@gmail.com website;www.manastrendz.com

सूरत में गोपी झील

गोपी झील भी 'सूरत' के सबसे लोकप्रिय पिकनिक स्थलों में से एक है। राज्यपाल मलिक गोपी ने १५१० ई. के आसपास इस झील का निर्माण किया था। यह झील अब बोटिंग, बंपर राइडिंग और ज़िपलाइनिंग गतिविधियाँ प्रदान करती है, इसके साथ ही युवाओं को विभिन्न बच्चों की गतिविधियां उपलब्ध कराई जाती हैं। आप यहां अपने दोस्तों या परिवार को भी ला सकते हैं। ध्यान रहे कि यह झील सोमवार के दिन बंद रहती है, झील सुबह १०:०० बजे खुलती है और रात १०:०० बजे बंद हो जाती है।

हमारे देश की पहचान है हिंदी और हमारा अभिमान है हिंदी-बिजय कुमार जैन

B. S. Agrawal
Past President
Mob. : 93747 15472
SGCCI
The Southern Gujarat Chamber of Commerce & Industry
235, Central Bazar, Vesu, Surat, Gujarat, Bharat-395007 | e-mail: bsagrawal1946©gmail.com

Kamal R. Bhutra
Mob. : 9328311111
Armaan Industries Pvt. Ltd.
A-210, India Textile Market,
Ring Road, Surat,
Gujarat, Bharat -395002
Email: r.r.bhutra0707@gmail.com

For Bulk Orders: Email: sharad@bikaji.com Bikaji Showroom Manager (Mumbai): Gopal Agarwal, M: 7045789957

Authorised Distributors: Malad (W): Bikaji Food Junxon, M: 7045789962, 7777084455 • Malad (E): M: 9320201995, 8097059366 • Goregaon (E): T: 022-28406700 M: 9321362383 • Andheri (W): Laxmi Indl. Est., T: 022-61668737, M: 7045789968, Lokhandwala, M: 8591073576, 9967428772 • Khar (W): M: 9892551163 • Mira Road (E): Shanti Nagar, T: 022-65696299, M: 9594696299, Kanakia, M: 9323404140, 9619890853 • Bhayandar (W): Opp. Maxus Mall, M: 9323404140, 9769691030, • 60 Feet Road M: 9930630506, 9867853149, 9537333251 • Bhayandar (E): M: 9619112244, 9082952106 • Thane (W) M: 7045789963

www.bikaji.com • 'Bikaji Online' App • Follow us on:

BHUJIA • NAMKEEN • SWEETS • SNACKS • PAPAD

भारत की शान हिंदी है महान-बिजय कुमार जैन

तुलसी विवाह कर कन्यादान का पुण्य प्राप्त करें

तुलसी विवाह एक पूजोत्सव है जो तुलसी और विष्णु के विवाह का उत्सव है। कार्तिक शुक्ल एकादशी से लेकर कार्तिक पूर्णिमा तक मनाया जाने वाला यह त्यौहार है। कहा जाता है कि भाद्रपद माह एकादशी को भगवान विष्णु ने शंखासुर राक्षस को मारा था और विपुल परिश्रम करने के कारण उसी दिन सो गए थे, अतः इसे देवशयनी एकादशी भी कहते हैं। भाद्रपद एकादशी से लेकर कार्तिक शुक्ल एकादशी तक कोई भी माँगलिक कार्य विवाह आदि नहीं हो सकते थे। तुलसी का विवाह सम्पन्न हो जाने के बाद ही सभी माँगलिक कार्य होने की सम्भावना बनती है।

तुलसी एक पूजनीय वनस्पति है जिसका वृक्ष दो-तीन हाथ से ज्यादा लम्बा नहीं होता, यह दो प्रकार की होती है एक श्याम तुलसी, दूसरी तुलसी हरी पत्तीवाली, ब्रह्म वैवर्ण पुराण में तुलसी के नामाभिकरण का उल्लेख है कि

नरा नायंश्च तांदू तुलनां दात्तुमक्षमाः
नैन नाम्ना च तुलसी तां वदन्ति पुराविदः

नर-नारी ने जिस वनस्पति को देखा, इसकी तुलना में ऐसी कोई भी वनस्पति नजर में नहीं आई इसलिए पुरातत्व वेत्ता ने उसे 'तुलसी' नाम दिया।

तुलसी की पौराणिक एवम्लोक कथात्मक उत्पत्ति की कथा कुछ ऐसी है :

समुद्र मन्थन के वक्त जो अमृत मिला उसके जमीन पर गिरने से तुलसी उत्पन्न हुई, जिसे ब्रह्मदेव ने विष्णु को अर्पण किया। हिन्दू धर्मानुसार धर्मध्वज नाम का एक राजा था उसकी पत्नी का नाम था माधवी, इस दम्पत्ति को एक कन्या रत्न की प्राप्ति हुई, जो सुन्दर थी, इसलिए लोग उसे 'तुलसी' कहकर पुकारने लगे, इस कन्या ने बदरीवन में विष्णु की प्राप्ति के लिए आराधना की, तब ब्रह्मदेव प्रसन्न हुए और उस कन्या ने ब्रह्मदेव को कहा, ''पूर्वजन्म में, मैं तुलसी नाम की गोपी थी। मैं कृष्ण की अति प्रिय थी। एक दिन मुझे और श्रीकृष्ण को, राधा ने देख लिया, क्रोधावेश उन्होंने मुझे श्राप दिया कि 'तू मानव योनि में जन्म लेगी 'कृष्ण को इस श्राप से बहुत दुःख हुआ, पर उन्होंने तुलसी से कहा, ''डरना नहीं, मानव जन्म में भी तू मुझे प्राप्त करेगी''

यह कथा तुलसी के मुख से सुनकर, ब्रह्मदेव बोले इसी जन्म में ही तुम्हें विष्णु की प्राप्ति होगी पर उसके पहले तुम्हें शंखचूड़ की पत्नी बनना होगा। वह दैत्य भी पूर्व जन्म में एक गोपी ही था पर राधा के शाप से दैत्य जन्म को प्राप्त हुआ, पूर्व जन्म में उसे तुमसे प्रेम था, उसे इस जन्म में सफल करना है। बाद में ब्रह्मदेव ने तुलसी को षोड्शाक्षरी राधिका मंत्र दिया और उसका जाप करने को कहा, तुलसी ने ठीक वैसा ही किया। एक दिन शंखचूड़ मिलता है, उसने गांधर्व विधि से तुलसी का पाणिग्रहण किया और संसार सुख को प्राप्त किया। दैत्य ने देव लोक को पराजित किया, अतः सभी देव विष्णु के पास गए और कहा! उसकी पत्नी की पतिव्रता के कारण उस दैत्य का नाश नहीं होगा, जब तुलसी को पता चला कि आनेवाला वह व्यक्ति उसका पति शंखचूड़ नहीं है, तब तुलसी ने श्राप दिया कि अगले जन्म में तू पाषाण बनेगा। विष्णु ने कहा तुमने मेरे लिए तपस्या की थी, इसलिए शंखचूड़ बना, अब तुझे दिव्य रुप मिलेगा और लक्ष्मी की तरह मुझे प्रिय होगी। तुलसी का विवाह करना एक पूजोत्सव है जिसे कन्यारत्न न हो, वे तुलसी विवाह कर कन्यादान का पुण्य प्राप्त कर सकते हैं। तुलसी विवाह करने वाले दम्पत्ति को, पवित्र स्नान करके तुलसी के पौधों के पास दीपक जलाकर, तुलसी एवम् शालिग्राम को पवित्र स्नान करवा कर, षोड्शोपचार से पूजाविधि सम्पन्न करनी चाहिए।

मंगलाचरण पढ़कर तुलसी की एक शाखा के शालिग्राम को छुएँ, इस तरह से तुलसी शालिग्राम का विवाह किया जाता है, बाद में आरती मंत्र पुष्पाँजलि कर, ब्राह्मण को भोजन एवम् दक्षिणा दी जाती है।

औद्योगिक नगरी सूरत के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

Ashok Kumar Jain
Mob: 98241 01436
ART SILK GREY BROKER
3055.C, Abhishek Tex, Market, 3rd Floor,
Ring Road, Surat, Gujarat, Bharat-395002
भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

औद्योगिक नगरी सूरत के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

Gopal Asawa
Mob. : 98790 11025
JAY BHARAT ENTERPRISE
(COAL SUPPLIER)
ARUN ASAWA Mob. : 9879011259
JAGDAMBAA PAPER CORPORATION
(DEALER DUPLEX & CRAFT PAPER)
E-128/129, 2' Floor, Laxminarayan Ind. Estate, Brc Compound,
Udhna-Pandesara Road, Surat, Gujarat, Bharat-394210

औद्योगिक नगरी सूरत के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

Shrikant Bang
Mob: 9376112188
Rudhram Avenue Flat No. B 605,
Near L.P.Savani School, Vesu, Surat, Gujarat, Bharat-395007
भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

यदि बढ़ाना है भारत को विकास की ओर, तो दें हिंदी भाषा पर जोर-बिजय कुमार जैन

नए वर्ष की शुरूआत होगी भव्यातिभव्य भागवत कथा से

- परम श्रद्धेय श्री गोविंद देवगिरी जी

एकल श्री हरि सत्संग समिति सूरत द्वारा परम श्रद्धेय श्री गोविंददेव गिरी जी महाराज के मुखारविंद से भागवत कथा ८ जनवरी से १४ जनवरी २०२३ तक होगी, पूज्य स्वामीजी श्री राम जन्म भूमि तीर्थ न्यास के कोषाध्यक्ष व भारत को केवल भारत ही बोला जाए अभियान का आह्वान करने वाली अंतर्राष्ट्रीय संस्थान मैं भारत हूँ फाउंडेशन के संरक्षक भी हैं।

भागवत कथा में निम्न तरीक़े से यजमान बनाए जाएँगे:
१. मुख्य यजमान और सौजन्य २. विशिष्ट यजमान
३. दैनिक यजमान ४. प्रसाद यजमान
५. महाप्रसाद यजमान

आपके द्वारा प्राप्त सहयोग की राशि से वनवासी समाज की संस्कार शिक्षा का प्रबंध होगा, अभी तक ७०००० गाँव में संस्कार शिक्षा का कार्य हो रहा है, हमारा लक्ष्य है ४.०० लाख गाँव में पहुँचना...

एकल श्री हरि की पुस्तिका और हनुमान जी की मूर्ति भेंट करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष सीए महेश मित्तल और चैप्टर अध्यक्ष रमेश अग्रवाल

एकल श्री हरि सत्संग समिति द्वारा आयोजित भागवत कथा का मुख्य उद्देश्य जन-जन तक जागृति फैलाना है, अपनी संस्कृति के प्रति। पूरे देश में लगभग ७२००० से अधिक गाँव में संस्कार शिक्षा केंद्र चल रहे हैं। गुजरात में भी लगभग २००० गाँव में संस्कार शिक्षा केंद्र चल रहे हैं।

एकल श्री हरि सत्संग समिति के कार्य का यह प्रभाव हुआ कि व्यसन मुक्ति में सहायता मिली। छुआ छूत खत्म हुआ। लोकतंत्र मज़बूत हुआ। आज वनवासी समाज की महिला सर्वोच्च पद पर पहुँच गई।

सूरत की एकल श्री हरि की पूरी टीम कथा की व्यवस्था में जुट गई है और एकल श्री हरि के उद्देश्यों की जानकारी और संस्था से जोड़ने के लिए घर घर सम्पर्क कर रहे हैं।

एकल श्री हरि के द्वारा सूरत की शबरी बस्ती में भी एकल विद्यालय चल रहा है। शबरी बस्ती के लोगों के साथ सभी सामाजिक, राष्ट्रीय और धार्मिक उत्सव मनाते हैं। एकल श्री हरि की महिला समिति ने संकल्प लिया है कि हम १०००० घरों से सम्पर्क करेंगे।

यह कथा वेसु के रामलीला मैदान में होगी। श्रद्धेय श्री गोविंददेव गिरी जी महाराज के मुखारविंद से होगी। आपकी वेदशालाओं में १००० से अधिक विद्यार्थी वेद और संस्कृत की शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

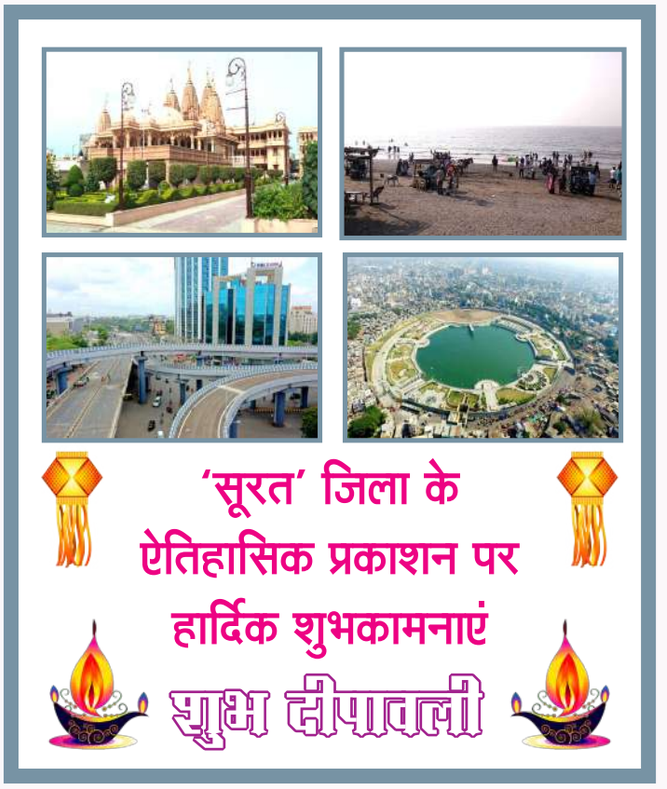

दवामुक्त पद्धति- सुजोक थेरेपी

सुजोक

इस दवामुक्त पद्धति का संशोधन १९८५ में कोरिया के एक फिलोसफर एवं वैज्ञानिक प्रो. पार्क जे द्वारा हुआ था। कुछ ही वर्षों में यह प्रणाली विश्व के ४२ देशों में प्रचलित हुई और वैकल्पिक चिकित्साओं में वैज्ञानीकरण पर आधरित यह सुजोक थेरेपी अपनी विशिष्टताओं के कारण रोग निवारण में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है।

सुजोक चिकित्सा प्रणाली की विशेषताएं

१. सरल एवं सहज।
२. दवा/ औषध रहित।
३. दुष्प्रभाव रहित।
४. तीव्र एवं त्वरित उद्‌भवित रोगों में चमत्कारी लाभ।
५. भौतिक ही नहीं परंतु आधि भौतिक रोगों में भी खूब असरकारक है।
६. हठीले रोगों में कम समय में बेहतर परिणाम।

इन्टरनेशनल सुजोक एसोसियेशन (ISA) की स्थापना प्रो. पार्क जे वु ने सन् २००५ में की। स्थापना के पहले यह प्रणाली मात्र 'सुजोक' के नाम से ही प्रचलित थी, लेकिन इस सुजोक प्रणाली को अपना-अपना अलग प्रभाव देते हुए विविध स्वरुपों में प्रस्तुति किया जाने लगा, इस विविधता को रोक लगाते हुए इस प्रणाली की पवित्रता, इलाज प्रणाली एवम सुयोजित शिक्षण की गुणवत्ता सर्वोच्च एवम् समान बनाने के लिये प्रो. पार्क ने यह संगठन स्थापित किया।

आज ४२ देशों में ISA की शाखाएँ कार्यरत हैं और हजारों चिकित्सक इस प्रणाली का अध्ययन ISA के कोर्स द्वारा प्रमाणित होकर अपना रोजगार/ सेवाक्रम सिद्ध कर रहे हैं। अपने भारत देश में ISA की नेशनल कमेटी के नीचे ४ कमेटी सुजोक के प्रचार-प्रसार में कार्यरत है। (East, West, North, South Zones)

इस सुयोजित ISA के अभ्यासक्रम एवम् प्रचार-प्रसार से आने वाले कुछ ही वर्षों में सुजोक की सही परिभाषा से समग्र सृष्टि को स्वास्थ्य एवम् कुदरत के अखूट रहस्यों से आत्मसात होने का लाभ प्राप्त होगा।

शारीरिक एवं भौतिक और आधि-भौतिक संदर्भ

१. भौतिक संदर्भः

भौतिक संदर्भ ''साम्यता के सिद्धांत'' पर आधारित प्रतिनिधित्व प्रणाली (Correspondance System) के अनुसार यह साबित होता है कि समग्र शरीर का प्रतिनिधित्व हमारे हाथों के क्षेत्रों में उपस्थित है, इस तरह से भौतिक स्तर पर कोई भी भाग चाहे वे बाहरी या अंदरूनी हों, उसका इस सुजोक की प्रतिनिधित्व प्रणाली से इलाज किया जा सकता है।

२. आधि-भौतिक संदर्भ :-

हमारे शरीर में उर्जा का परिभ्रमण होता है, इस उर्जा के परिभ्रमण से हमारे हर कोष, हर कोशिका, हर अंग, प्रवृत रहता है। इस उर्जा की वजह से शरीर में जान या प्राण होता है। यह उर्जा अगर किसी भी अंग को मिलना बंद हो जाए तो वह अंग अचानक काम करना बंद कर देता है। इस उर्जा को हम देख नहीं सकते, योग की भाषा में इसे प्राण, धर्म की भाषा में इसे जीवन चेतना (ईश्वर) या विज्ञान की भाषा में माइकोप्लास्मीक बोडी भी कहा जाता है।

प्रतिनिधित्व प्रणाली (Correspondance System) के हिसाब से अगर शरीर का हर एक अवयव/ अंग का प्रतिनिधित्व स्थान अपने हाथों के पंजो में उपस्थित हो, तो इन अंगों को मिलनेवाली उर्जा प्रणाली भी उसी स्वरूप में हाथों में उपस्थित होती है, इसी उर्जा प्रवाह के योग्य उपस्थित स्थानों को ढूंढ कर, इस प्रवाह में परिवर्तन करके हम शरीर में वहन होती उर्जा को परिवर्तित कर सकते हैं। ऐसी उर्जा इलाज प्रणाली से हम शरीर की विविध तकलीफों का इलाज बड़े सरल तरीके से कम से कम समय में कर सकते हैं, इस प्रकार के इलाज को आधि-भौतिक या Meta Physical इलाज कहा जाता है।

चिकित्सा प्रणाली

अपने हाथों एवम् पैरों में समग्र शरीर के भौतक एवं आदि भौतिक (उर्जा) स्थान उपस्थित होते हैं जिन्हें हम सुजोक पोइन्ट्स के नाम से जानते हैं। इन पोइन्ट्स को ढूंढकर उसमे स्टीमुलेशन (प्रेशर) देकर रोग निवारण सिद्ध कर सकते हैं। स्टीमुलेशन करने के विविध प्रकार होते हैं, जैसे की प्रेशर, पंचर, कलर-थेरापी, सीड, मोक्षा आदि थेरापी लाइट स्टीमुलेशन वगैरह Acupressure, Acupuncture, Ring Therapy बिंदु पर दिशा युक्त मसाज, मेगनेट थेरेपी....

सुजोक एक्युप्रेशर में डायोनेस्टिक प्रोब की मदद से पोइन्ट को ढूंढकर उस पर कोई दाना या चुंबक लगाकर निश्चित समय तक स्टीम्युलेशर (प्रेशर) दिया जाता है। उर्जा संबंधित तकलीफों में दिशायुक्त प्रेशर देने के लिये ज्यादातर बार मेग्नेट या गेहूं के दाने का उपयोग किया जाता है।

सभी प्रकार की शारीरिक, मानसिक एवं उर्जा संबंधित तकलीफ

- जोड़ों का दर्द
- नस का दबाव
- पेरालीसिस
- किडनी एवं हृदय संबंधित
- डीप्रेशन
- पाचन तंत्र की तकलीफ
- फोबीया
- मोटापा
- होरमोनल डुन्बरेल्वेन्स
- बाल झड़ना
- डायाबिटीस
- अति क्रोध
- ब्लड प्रेशर

दुष्प्रभावरहित, दवा/ औषध रहित, त्वरित असरकारक एवम् तीव्र आवेगों में चमत्कारिक परिणाम मिला है।

साभारः पवन झुनझुनवाला
इंटरनेशनल सुजोक एसोसिएशन,
वेस्ट जोन गुजरात कोऑर्डिनेटर

सूरत जिला है सबसे निराला यहां है
दांडी, डुमास, हजीरा, तीथल,
उभरात हमारा सूरत के
प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं

Jagdish Prasad Garg
Mob : 9925100133

TRIBENI
GROUP of COMPANIES
Always Innovative

TRIBENI GROUP

201, Tribeni House, Raghuveer Business Empire,
Aai mata Chowk, Parvat Patiya, Surat,
Gujarat, Bharat-395010
Ph.: 0261-2325905 ~ Fax: 0261-2612329429
Email : jagdish@tribenigroup.com

धर्म, कला और संस्कृति का खूबसूरत संगम है,
यहां होता देवी देवताओं का अदभुत मिलन है
सूरत जिला के ऐतिहासिक प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

Anil Jain
Mob. : 93777 83648

!! काशीकला !!

THE WEAVING HUB

Shop No. 8, Globale Textile Market,
Opp. New Bombay Mkt., Sahara Darwaja,
Umarwada, Surat, Gujarat, Bharat-395010
e-mail:- 0261-2352281

कुछ अलग ही सुकून मिलता है सूरत की मिट्टी में
और कुछ अलग ही स्वाद है यहां के खाने में
सूरत जिला के ऐतिहासिक प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं

Brijmohan Agrawal
Mob : 9825118396

Shree Key Tex. Processors Pvt. Ltd.

W-2209, Surat Textile Market, Ring Road,
Surat, Gujarat, Bharat- 395002
Ph: 0261-2322425 Email: sktppl287@gmail.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

हिंदी को जन साधारण की भाषा बनाना है, विदेशी भाषा से हनन को बचाना है-बिजय कुमार जैन

चंद्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर पारले प्वाइंट में

सूरतः २००१ में पंच कल्याणक हुआ, आशीर्वाद परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी शिष्य सानिध्य मुनि नियम सागरजी ससंघ का सानिध्य मिला। सौधर्म इंद्र पुष्पा देवी ओमप्रकाश जैन (अध्यक्ष) माता-पिता आशा देवी सुरेन्द्र कुमार कुबेर इंद्र निशा देवी अरुण कुमार जैन रहे। वर्तमान में अध्यक्ष आशीष ओम प्रकाश जैन, कार्याध्यक्ष अशोक कुमार जैन, नरेश चंद जैन, महामंत्री कमलेश गांधी हैं।

- २००४ का मुनिपुंगव सुधासागरजी महाराज का ससंघ चातुर्मास
- उपाध्याय श्री ज्ञान सागरजी महाराज चातुर्मास
- आचार्य श्री सुनील सागर जी महाराज ससंघ चातुर्मास
- मुनि श्री समता सागर जी महाराज ससंघ चातुर्मास
- मुनि शुभम कीर्ति महाराज चातुर्मास हुआ है।

विदित हो कि गुजरात में प्रथम सौधर्म प्रतीक मानस्तंभ पाषाण निर्मित चार मंजिला मंदिर है।

श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जैन मंदिर नानपुरा में

सूरतः १९८५ को संस्थापक श्रावक शिरोमणि बाबूलाल - सुशीला देवी जैन ने अपनी पुत्री की स्मृति में श्री महावी स्वामी दिगम्बर जैन मंदिर नानपुरा में बनाया था। सर्वश्री पदम भाई जैन, प्रफुल्ल भाई दलाल व कापड़िया आदि ने दिगम्बर जैन बोर्डिंग को मंदिर के लिए जमीन भेंट करवाया।

वर्तमान अध्यक्ष आशीष ओमप्रकाश जैन, कार्याध्यक्ष अशोक कुमार जैन, उपाध्यक्ष नरेश चंद जैन, महामंत्री कमलेश गांधी जैन आदि के साथ विशेष योगदान सुगन चंद शाह, मगनकाका (मुनि श्री सौम्य सागरजी) के साथ रमेश भाई शाह का रहता है।

सूरत के नजदीक अन्य दर्शनीय स्थल

समवसरण तीर्थ, भरूच

श्री १००८ पार्श्वनाथ जैन मंदिर, महुआ

श्री १००८ शीतलनाथ भगवान जैन मंदिर, सजोद

चिंतामणि पार्श्वनाथ जैन मंदिर

कृपया मुझे INDIA ना बोलें क्योंकि
मैं भारत हूँ

नारायण साबु
ट्रस्टी माहेश्वरी भवन सिटीलाइट सूरत
लक्ष्मणगढ़ निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२४१७६८००

नारायण जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' के संदर्भ में कहते हैं कि पहले और आज के सूरत में जमीन आसमान का अंतर आ गया है, पहले यहां की आबादी लगभग ५ लाख थी जो आज ७० लाख के आसपास है, यहां का इंफ्रास्ट्रक्चर बहुत अधिक विकसित हुआ है और यह सब हिंदी भाषियों के आगमन के पश्चात हुआ है, जब वे यहां आए और व्यापार करना प्रारंभ किया इसलिए आज सूरत विश्वस्तर पर पहचाना जाने लगा। सूरत का पानी ही ऐसा है जो कि सभी को रास आ जाता है। यहां आने वाला कभी खाली पेट नहीं रहता अर्थात जो आता है वह कमाता अवश्य है। सूरत में राजस्थानी समाज की संख्या भी अन्य समाज की तुलना में सबसे अधिक है, यह समाज विशेष रूप से कपड़े के व्यवसाय से जुड़ा है, डायमंड के व्यवसाय में गुजराती समाज के लोग अधिक हैं, साथ ही पंजाब, बिहार, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश व अन्य समाज के लोग भी यहां व्यवसाय व रोजगार निमित्त कार्यरत हैं, सभी समाज धर्म के लोग होने के बावजूद यहां का सामाजिक माहौल बहुत ही शांतिपूर्ण है। यहां के लोग बड़े शांतिप्रिय व प्रेम व्यवहार रखने वाले हैं, सभी काम से काम में मतलब रखते हैं, यहां सभी के द्वारा अपनी संस्कृति को संजोया गया है। सूरत आज स्वच्छ शहर के नाम से विश्वविख्यात है, यहां के प्रमुख मंदिरों में अंबाजी का मंदिर, श्याम बाबा जी का मंदिर जैसे कई मंदिर प्रसिद्ध हैं, साथ ही यहां सभी धर्म समाज की अपनी-अपनी संस्थाएं व मंदिर बने हुए हैं जो समाज सेवा के लिए सतत सक्रिय रहते हैं, माहेश्वरी समाज की भी यहां कई संस्थाएं कार्यरत हैं ऐसी और भी विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की...

नारायण जी मूलतः राजस्थान के सीकर जिले में स्थित 'लक्ष्मणगढ़' के निवासी हैं, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'लक्ष्मणगढ़' में ही संपन्न हुयी है। १९६९ से आप 'सूरत' में बसे हुए हैं व टेक्सटाइल के व्यवसाय से जुड़े रहे, वर्तमान में टेक्सटाइल व कंक्रीट ब्लॉक निर्माण के व्यवसाय में भी संलग्न हैं। आपकी कंपनी स्टॉक एक्सचेंज में पंजीकृत है, साथ ही आप सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। सूरत के सिटी लाइट में स्थित माहेश्वरी भवन के ट्रस्टी हैं, साथ ही अन्य कई संस्थाओं में भी विशेष रूप से कार्यरत हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ एक ही रहना चाहिए 'भारत'। जय भारत!

नेमीचंद जांगिड़
संस्थापक मानव सेवा फाउंडेशन सूरत
नागौर निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९९९८१२०००३

नेमीचंद जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' के संदर्भ में कहते हैं कि पिछले कुछ वर्षों में 'सूरत' के हर क्षेत्र में हर दिशा में बहुत बदलाव आया है, चाहे वह व्यापार, उद्योग, कंस्ट्रक्शन या आर्थिक स्थिति की बात हो, सभी क्षेत्रों में परिवर्तन आया है। पहले जो व्यक्ति साइकिल व दो पहिया वाहन का उपयोग करता था, आज वह चार पहिया वाहन का उपयोग करता है। सूरत कपड़ा उद्योग व डायमंड उद्योग के लिए विशेष रूप से जाना जाता है, पूरे भारत में सबसे महंगी 'जरी' का निर्माण सूरत में ही होता है, यहां जरी की खरीदारी के लिए मुंबई, कोलकाता जैसे महत्वपूर्ण शहरों से लोग आते हैं। यहां सभी धर्म और समाज के लोग बसे हुए हैं, सभी के बीच तालमेल बहुत ही उत्तम है, दूध में शक्कर के जैसा। सभी के बीच प्रेम भाव बहुत ही उत्तम है। सूरत के ८०% विकास का कारण यहां के प्रवासियों से हुआ है। यहां गुजराती से ज्यादा प्रवासी समाज के लोग बसे हैं, जिसमें राजस्थानीयों की संख्या सबसे अधिक है। यहां सभी धर्म और समाज के मंदिर, सामाजिक संस्थाएं बनी हुई हैं। कपड़ा मार्केट व डायमंड मार्केट जो सूरत में बना है, वैसा विश्व में कहीं नहीं है। यहां जांगिड़ समाज के लगभग ५००० परिवार निवास करते हैं, जिनमें अधिकतर लोग फर्नीचर व्यवसाय से जुड़े हैं, बहुत कम ही हैं जो टेक्सटाइल व्यवसाय से जुड़े हैं, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर मेरा यही कहना है कि भारत का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहे तभी 'भारत' विश्व गुरु की ओर अग्रसर होगा। इंडिया तो अंग्रेजी नाम है और यह गुलामी का प्रतीक है, हमारी संस्कृति हिंदी से है और हिंदी से ही रहनी चाहिए।

नेमीचंद जी मूलतः राजस्थान स्थित नागौर जिले के डेगाना तहसील के नथावड़ा गांव के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। 'सूरत' में आप प्रॉपर्टी, टेक्सटाइल व पेट्रोल पंप व्यवसाय से जुड़े हुए हैं, साथ ही कई सामाजिक व औद्योगिक संस्थाओं में विशेष पदों पर हैं। सूरत कपड़ा कमेटी जिसे 'फोस्टा' कहा जाता है, के पिछले १५ सालों से डायरेक्टर पद पर सेवारत हैं, साथ ही अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच सूरत शाखा के १० सालों तक अध्यक्ष रहे हैं, अन्य विभिन्न सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हैं, हाल ही में आपके द्वारा स्थापित 'मानव सेवा फाउंडेशन' द्वारा सामाजिक कार्योंकी शुरुआत की गई है।

गिरधर गोपाल मूंधड़ा

उद्योगपति व समाजसेवी

पिपरिया मध्य प्रदेश निवासी-सूरत प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९८२४१११९००

गिरधर जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि आज से ४० साल पहले का सूरत और आज के सूरत में सब कुछ बदल चुका है। पहले यहां की आबादी मात्र १० लाख था आज ७० लाख से भी अधिक है। व्यापारिक क्षेत्र की बात की जाए तो पहले सीमित था आज विस्तृत रूप में फैला हुआ है। भारत ही नहीं विश्वस्तर पर सूरत के कपड़ों की मांग रहती है, साथ ही यहां से कपड़े भारत के विभिन्न क्षेत्रों में जाते हैं। विशेषकर पॉलिस्टर कपड़ों का यह बहुत बड़ा मार्केट है, यहां कारोबार में गुजराती, राजस्थानी, पंजाबी विशेष रूप से कार्यरत हैं, सभी की मेहनत से 'सूरत' में रात दिन उद्योगों का विकास हो रहा है। यहां के सभी इंडस्ट्रीज सादर्न गुजरात चेंबर ऑफ कॉमर्स के अंतर्गत आते हैं, जिसके अंतर्गत संचालित टेक्सटाइल इंडस्ट्रीज द्वारा हर वर्ष एग्जीबिशन लगाए जाते हैं, जहां २० से २५ हजार विजिटर आते हैं, इसी से सूरत की आर्थिक स्थिति का अंदाजा लगाया जा सकता है। यहां के लोग बड़े ही धार्मिक प्रवृत्ति के हैं, समय-समय पर विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम संपन्न किए जाते हैं, यहां कई-कई सामाजिक संस्थाएं भी सक्रिय हैं। यहां के प्रमुख मंदिरों में अंबाजी का मंदिर, श्याम बाबा जी का मंदिर द्वारकाधीश जी का मंदिर विशेष रूप से उल्लेखनीय है, ऐसी अनेक विशेषताएं हमारी 'सूरत' की...

गिरधर जी मूलतः राजस्थान स्थित परबतसर के निवासी हैं। आपका परिवार लगभग २०० वर्षों से मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले में स्थित पिपरिया के निवासी है। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। पिछले ४० वर्षों से आप 'सूरत' में बसे हुए हैं और टेक्सटाइल उद्योग से जुड़े हुए हैं। सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। महावीर हॉस्पिटल के ट्रस्टी, जीवन ज्योति ट्रस्ट अमरोली के उपाध्यक्ष, माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष रहे हैं। माहेश्वरी महासभा के शिक्षा विभाग के उपाध्यक्ष रहे हैं। रंगनाथ मंदिर वृंदावन के भी ट्रस्टी के रूप में कार्यरत हैं, अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हैं। सादर्न गुजरात चेंबर ऑफ कॉमर्स के अंतर्गत संचालित जी एफ आर आर सी जो कि टैक्सटाइल इंडस्ट्री से जुड़ी है के चेयरमैन के रूप में सेवारत हैं, अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि हमारे देश का प्राचीन नाम हमेशा से 'भारत' आर्यव्रत या भारतवर्ष रहा है, जो युगों-युगों से चला आ रहा है, पर अंग्रेजों की दूषित कूटनीति के कारण उन्होंने इस देश का नाम इंडिया रख दिया, जिसका ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में अर्थ गरीब व गवार लोग है। भारत शब्द में जो अपनापन है वह इंडिया में कहां? भारत ३ अक्षर भा-र-त से मिलकर बना है। भा का अर्थ है भाव, रा का अर्थ है राग व त का अर्थ है ताल अर्थात भाव को राग ताल के साथ प्रस्तुत करते हुए मिल जुल कर रहना। जय भारत!

अशोक बड़जात्या

पूर्व संरक्षक मंत्री दिगम्बर जैन समाज

रानोली निवासी-सूरत प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९८२४१०१४३६

अशोक जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' के संदर्भ में कहते हैं कि आज से ४० साल के पहले का सूरत और आज के 'सूरत' में बहुत ही परिवर्तन आ गया है। इक्का-दुक्का लोगों के पास ही फोन हुआ करते थे, कुछ गिने चुने लोगों के पास ही ४ पहिया वाहन हुआ करते थे। सड़कें पूरी खाली रहती थी, तीन-चार मार्केट ही 'सूरत' में थे, पर आज का 'सूरत' बहुत ही व्यापक रूप से विस्तृत हो गया है। विशेषकर व्यापार उद्योग के लिए बड़े पैमाने पर जाना जाता है। यहां साड़ी, ड्रेस मैटेरियल का मार्केट सबसे अधिक है, साथ ही यहां साड़ी के कई कारखाने हैं, पावरलूम की संख्या भी अधिक थी पर अब पहले की तुलना में कम हो गई है उसका स्थान आधुनिक मशीनों ने ले लिया है। 'सूरत' में साड़ियों पर ज़री व लेस का काम बड़े पैमाने पर होता है। 'सूरत' में डायमंड का काम भी बहुत बड़े पैमाने पर होता है। व्यापार क्षेत्र में यहां राजस्थानी, पंजाबी, गुजराती आदि क्षेत्र के लोग कार्यरत हैं। पावरलूम में बिहार, उड़ीसा, उत्तरप्रदेश के लोग जुड़े हैं। यहां सभी धर्म समाज के लोग हैं, यहां का सामाजिक व धार्मिक माहौल बहुत ही अच्छा है। यहां सभी धर्म और समाज की अपनी-अपनी सामाजिक संस्थाएं बनी हुई है। यहां का 'तीन पत्ती' मंदिर विशेष रूप से उल्लेखनिय है, इसी स्थान पर दानवीर कर्ण का दाह संस्कार हुआ था। यहां दिगम्बर जैन परिवार लगभग दो हजार के करीब हैं, साथ ही यहां जैन समाज द्वारा विभिन्न सामाजिक कार्यक्रम समय-समय पर किए जाते हैं। यहां से ४० किमी की दूरी पर स्थित सबसे पुराना 'महुआ पार्श्वनाथ जी' का प्रसिद्ध मंदिर है। 'सूरत' से ६० किमी की दुरी पर स्थित है सजोद अतिशय क्षेत्र, जिसमें मूलनायक १००८ शीतलनाथ जी हैं। साथ ही यहां 'दुम्मस' बीच व 'उमराठ' बीच प्रसिद्ध है, यहां से ८० किलोमीटर की दूरी पर स्थित है 'लिबर्टी ऑफ स्टेचू' आदि के साथ आसपास के क्षेत्र में कई प्रमुख स्थान हैं घूमने के लिए, और भी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, यही हमारे देश की संस्कृति व वास्तविक पहचान है।

अशोक जी राजस्थान स्थित दिगम्बर आचार्य विद्यासागर जी के गुरू ज्ञानसागर जी की जन्मस्थली सीकर स्थित 'रानोली' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, यहां आप कपड़ों की दलाली के व्यवसाय के साथ स्वयं का भी कपड़ों का कारोबार है। आप सामाजिक सेवा में भी सक्रिय हैं, दिगम्बर जैन समाज में विशेष रुप से सक्रिय हैं, खंडेलवाल दिगम्बर जैन समाज के संगठन मंत्री रह चुके हैं, अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हैं। जय भारत!

हमारे देश की पहचान है हिंदी और हमारा अभिमान है हिंदी-बिजय कुमार जैन

सीए महेश मित्तल
अध्यक्ष अग्रवाल प्रगति ट्रस्ट सूरत
चनाना निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९३७४७११३५०

महेश जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि आज से ३५ साल पहले का सूरत और आज के 'सूरत' में जमीन आसमान का अंतर आ गया है, पहले यह बहुत गंदा शहर था पर आज स्वच्छता की दृष्टि में या भारत के दूसरे नंबर का प्रमुख शहर है। सूरत के हर क्षेत्र में परिवर्तन आया है चाहे वह उद्योग व्यापार हो, लोगों के रहन-सहन का स्तर हो या अन्य कोई क्षेत्र, सभी क्षेत्रों में परिवर्तन आया है। उद्योग व्यापार के लिए विशेषकर डायमंड और कपड़ा व्यवसाय के लिए 'सूरत' पूरे विश्व में विख्यात है। यहां का इंफ्रास्ट्रक्चर बहुत तेजी से बढ़ा है, इससे आज पुलों का शहर के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि यहां १२० पुल बने हैं, इसलिए यहां ट्रैफिक जैसे कभी कोई समस्या उत्पन्न नहीं होती, यहां बेरोजगारी ना के बराबर है। सूरत का जीडीपी स्तर लगातार बढ़ता ही जा रहा है, हाल ही में यहां डायमंड बुर्स का निर्माण किया गया है जो अपने आप में ही अनोखा है, इससे सूरत की शान और बढ़ गई है। माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी के हाथों इसका उद्घाटन होने वाला है। 'सूरत' में गुजराती समाज से ज्यादा अन्य समाज के लोग अर्थात बाहर से आकर बसने वालों की संख्या अधिक हो गयी है, आपस में इतने घुल-मिल गए हैं, जिस तरह दूध में चीनी घुल जाती है, सभी एक दूसरे से मेल मिलाप भाईचारा बहुत ही उत्तम है। यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही सौहार्दपूर्ण है, यहां लड़कियां रात में भी यदि घर से निकले तो वह सुरक्षित हैं, यहां के लोग जीवन जीना जानते हैं, हर खुशियों, हर उत्सव हर पल को जीते हैं। २००६ में आई बाढ़ में यहां के जनजीवन को पूरी तरह अस्त-व्यस्त कर दिया था, इसके बावजूद लोगों के आपसी तालमेल और सहयोग से इस भयावह परिस्थिति से बड़े ही आसानी से निकल गए। सूरत को धार्मिक नगरी के रूप में भी जाना जाता है, क्योंकि यहां कई देवी-देवताओं के मंदिर हैं, जिनमें अंबाजी का व खाटू श्याम जी का मंदिर विशेष रूप से प्रसिद्ध है, यह लोगों की आस्था का मुख्य केंद्र है साथ ही मेदीपुर में बालाजी का मंदिर, रानी सती मंदिर व अन्य कई मंदिर हैं, ऐसी अन्य कई विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की...

महेश जी मूलतः राजस्थान स्थित झुंझुनू जिले के 'चनाना' के निवासी हैं। आपका जन्म व प्रारंभिक शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, तत्पश्चात उच्च शिक्षा आपने जयपुर से ग्रहण की। १९८७ से आप 'सूरत' में बसे हुए हैं सीए की प्रैक्टिस कर रहे हैं, साथ ही आपके पुत्र भी आपके साथ संलग्न हैं। सूरत स्थित अग्रवाल प्रगति ट्रस्ट के अध्यक्ष हैं व एकल अभियान द्वारा संचालित श्री हरी सत्संग समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी हैं। आरएसएस से भी जुड़े हैं, अन्य कई सामाजिक संस्थाओं से भी संलग्न है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, इसकी शुरुआत हमें स्वयं से करनी होगी, सरकार द्वारा जब होगा तब होगा, लेकिन शुरुआत हम जनता को ही करनी होगी कि अपने देश को इंडिया की जगह 'भारत' नाम से संबोधित करें।

अरविंद अजमेरा
व्यवसाई व समाजसेवी
सीकर निवासी-सूरत निवासी
भ्रमणध्वनि: ९३७४७१८६२१

अरविंद जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले की तुलना में 'सूरत' पूरी तरह से परिवर्तित हो गया है, इसके हर क्षेत्र में प्रगति हुई है, जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ती गई, वैसे-वैसे यहां का विकास होता गया, सड़कें चौड़ी हो गई, मार्केट बड़े बन गए, भवन भी बड़े-बड़े (अट्टालिकाएं) बने हैं। कई लोगों की आमदनी का जरिया बढ़ा है, जो भी यहां प्रवासी आकर बसा, उसने तन-मन-धन से 'सूरत' को अपनाया। 'सूरत' का इंफ्रास्ट्रक्चर भी बहुत अधिक उन्नत हुआ है। यहां भारत के सभी राज्यों के लोग बसे हैं, जिनमें विशेषकर राजस्थानी, पंजाबी, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार, उड़ीसा आदि क्षेत्रों की संख्या अधिकतम हैं, सबसे अधिक संख्या राजस्थानी समाज की है, इसके बावजूद सभी के बीच आपसी सामंजस्य बहुत ही उत्तम है, इसे 'मिनी भारत' भी कहा जाता है, सभी संस्कृतियों का संगम यहां देखने को मिलता है। राजस्थानी समाज द्वारा हर पर्व बड़े ही हर्षोल्लास से मनाया जाता है, चाहे वह तीज हो, गणगौर हो, छोटी तीज, गरबा तो यहां की शान है। यहां कई देवी-देवताओं के मंदिर हैं, जिनमें अंबाजी का मंदिर विशेष रूप से प्रसिद्ध है, संपूर्ण सूरत वासी की श्रद्धा अंबाजी से जुड़ी हुई है, स्वामीनारायण का मंदिर है। यहां से १०-१५ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है जहांगीरपुरा, जहां हरे रामा-हरे कृष्णा का मंदिर है। २० किलोमीटर की दूरी पर स्थित है 'दुम्मस' बीच, जहां लोग वीकेंड पर जाना पसंद करते हैं, साथ ही यहां कई पार्क बने हुए हैं जिसका विकास किया जा रहा है। यहां माहेश्वरी समाज के लगभग १० हजार परिवार निवास करते हैं, हर क्षेत्र की अपनी स्थानीय संस्था बनी हुई है। सूरत में दो माहेश्वरी भवन भी बने हुए हैं। माहेश्वरी समाज द्वारा यहां स्कूल का भी निर्माण किया गया है, साथ ही माहेश्वरी समाज के युवा वर्ग व महिलाएं भी समाज क्षेत्र में विशेष सक्रिय हैं, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य हमें एक ही नाम से जाना जाए, यदि कई नामों से जाना जाएगा तो विदेशी भी असमंजस में पड़ जाता है, हमारे देश का एक ही नाम होना चाहिए 'भारत' जो कि हमारे देश का मूल नाम है।

अरविंद जी मूलतः राजस्थान स्थित सीकर जिले के 'कोटरी' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, पिछले २७ वर्षों से आप 'सूरत' में बसे हैं, कपड़ा व्यापार से जुड़े हैं, साथ ही माहेश्वरी समाज में यथासंभव अपनी सक्रिय भागीदारी निभाते हैं। जय भारत!

कोई भी राजनीतिक कारण कितने ही प्रबल क्यों न हों, 'हिन्दी' भाषा के इस उत्थान में आड़े आने नहीं देना चाहिए - बिजय कुमार जैन

अनिल जैन
ट्रस्टी आदिनाथ जैन मंदिर मॉडल टाउन सूरत
किशनगढ़ निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९३७७७८३६४८

अनिल जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' के संदर्भ में कहते हैं कि पहले और आज के 'सूरत' में बहुत परिवर्तन आ गया है, यह परिवर्तन व्यापार, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक सभी क्षेत्रों में आया है। दिन-प्रतिदिन 'सूरत' का आर्थिक स्तर बढ़ता ही जा रहा है। यहां भारत के विभिन्न क्षेत्रों हरियाणा, दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, झारखंड, बिहार, राजस्थान आदि सभी क्षेत्रों से लोग व्यापार के लिए आकर बसने लगे, इन सबके बावजूद यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही उत्तम है, सभी के बीच परस्पर सामंजस्य बहुत ही अच्छा है। स्वच्छता की दृष्टि से 'सूरत' भारत में दूसरे क्रमांक पर स्थापित हुआ है। पर्यटन की दृष्टि से यहां के दो दरिया किनारा प्रसिद्ध है एक है दुम्मस और दूसरा है उमराठ। यहां सभी धार्मिक समाज की संख्या स्थापित है। हमारे दिगम्बर जैन समाज के भी लगभग २००० परिवार यहां निवास करते हैं। सूरत के नजदीक ४ तीर्थ क्षेत्र हैं उसमें १ कतारगाम अतिशय तीर्थ क्षेत्र आदिनाथ भगवान का और नजदीक में पार्श्वनाथ भगवान का महुआ में और सजोद में शीतलनाथ भगवान का तीर्थ क्षेत्र और अंकलेश्वर में तीन अतिशय मंदिर है। साथ ही अन्य धर्म समाज के लोगों के भी यहां कई मंदिर व सामाजिक संस्थाएं बनी हुई है, ऐसी ही अन्य कई विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का एक ही नाम होना चाहिए 'भारत'। आचार्य विद्यासागर जी ने भी इसका आह्वान किया है।

अनिल जी मूलतः राजस्थान के अजमेर जिले में स्थित 'किशनगढ़' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। पिछले ३५ वर्षों से आप 'सूरत' में बसे हुए हैं और कपड़ा व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। सूरत के मॉडर्न टाउन स्थित आदिनाथ जैन मंदिर के ट्रस्टी के रूप में कार्यरत हैं। जय भारत!

भागीरथ पंपालिया
व्यवसाई व समाजसेवी
जोधपुर निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२५९५०१२०

भागीरथ जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' की विशेषताओं का वर्णन करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'सूरत' में बहुत बड़ा अंतर आ गया है, हमारा रिंग रोड पहले की तुलना में ८ गुना बढ़ गया है। जनसंख्या भी बहुत तेजी से बढ़ गई है और हमारे माहेश्वरी समाज की संख्या लगभग १०० गुना बढ़ी है। सूरत की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहां का वातावरण हमेशा ही खुशमिजाज़ रहता है। यहां के लोग बड़े ही मिलनसार और खुश रहने वाले हैं। यहां का कपड़ा बाजार और डायमंड बाजार बहुत ही बड़ा है जो हर किसी को रोजगार देने के लिए सक्षम है। यहां लगभग ७०० कपड़ा प्रिंटिंग मिले हैं और २ लाख पावरलूम हैं और पांच लाख के करीब दुकानें हैं। कपड़ा व्यवसाय में ३०-३५% राजस्थानी, १०% गुजराती, १०-१५% पंजाबी व अन्य समाज के लोग हैं। डायमंड व्यापार में अधिकतर संख्या गुजरातियों की है। यहां सभी धर्म और समाज के लोग बसे हैं, सभी अपने-अपने पर्व बड़े ही उत्साह पूर्वक मनाते हैं, जिसमें अन्य धर्म समाज के लोग भी सम्मिलित होते हैं। खाने-पीने की दृष्टि से भी हमारा सूरत बहुत ही उत्तम है। यहां हर कदम पर होटल, कॉफी हाउस व अन्य प्रतिष्ठान बने हुए हैं। यहां के लोग खाने-पीने के बड़े शौकीन हैं। पर्यटन की दृष्टि से देखा जाए तो यहां का 'दुम्मस' दरिया किनारा प्रसिद्ध है, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर मेरा यही कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम एक ही रहना चाहिए 'भारत' जो कि हमारी वास्तविक पहचान है।

भागीरथ जी मूलतः राजस्थान के जोधपुर जिले में स्थित 'थाडिया' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा महाराष्ट्र स्थित आकोला के 'खामगांव' में संपन्न हुई है। पिछले ३९ वर्षों से आप सूरत में व्यवसाय निमित्त बसे हैं और यहां कपड़ों के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही माहेश्वरी समाज के विभिन्न संस्थाओं में सक्रिय हैं। जय भारत!

मदनलाल बोथरा
ट्रस्टी समता भवन
नागौर निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२५१४०७९३

मदन लाल जी अपनी कर्मभूमि 'भारत' का एक राज्य गुजरात का एक शहर 'सूरत' के संदर्भ में कहते हैं कि आज से लगभग ३५ वर्ष पूर्व का 'सूरत' और आज के 'सूरत' में बहुत अंतर आ गया है। पहले यह सबसे गंदा शहर हुआ करता था, पर आज स्वच्छता की दृष्टि में 'भारत' के सबसे स्वच्छ शहरों में प्रमुख है। यहां कई फ्लाईओवर्स बन चुके हैं। इंफ्रास्ट्रक्चर के दृष्टिकोण से कई गुना प्रगति हुई है। यहां राजस्थान, गुजरात, सिंधी, पंजाबी, यूपी, बिहार, उड़ीसा व अन्य क्षेत्रों के लोग व्यापार-व्यवसाय निमित्त बसे हुए हैं, जिसके कारण 'सूरत' की प्रगति दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। यहां हर समाज के लोग आपसी मेल-मिलाप के साथ रहते हैं, सभी पर्व बड़े उत्साह पूर्वक मनाते हैं, यहां के प्रमुख पर्यटन स्थलों में 'दुम्मस बीच' विशेष रूप **शेष पृष्ठ ३७ पर...**

देश की शान, हिंदी है महान-बिजय कुमार जैन

पृष्ठ ३६ से ... से उल्लेखनीय है, साथ ही यहां एडवेंचर्स राइट्स के लिए कई स्थान हैं। 'सूरत' हर क्षेत्र से घूमने के लिए एक अच्छा स्थान है, साथ ही शाम के समय यहां खाने-पीने के लिए दुकानों पर भीड़ लग जाती है। यहां के लोग खाने-पीने के बड़े शौकीन हैं, ऐसी ही अन्य कई विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की...
'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' अभियान पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, जो कि हमारे देश की वास्तविक पहचान है, इसका मैं पूर्ण समर्थन करता हूँ।
मदन लाल जी मूलतः राजस्थान के नागौर जिले में स्थित 'अलाय' के निवासी हैं। आपका जन्म व शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, तत्पश्चात उच्च शिक्षा आपने गुवाहाटी आसाम से ग्रहण की। १९९० से आप सीए की प्रैक्टिस कर रहे हैं, साथ ही साधुमार्गी जैन संघ के अध्यक्ष व मंत्री भी रहे हैं। समता युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी रहे, अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हैं। जय भारत!

अशोक सिंघल
व्यवसाई व समाजसेवी
हिसार निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९३७६७९१३५१

अशोक जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'सूरत' आज एक महानगर बन चुका है, इसका विस्तार १० गुना अधिक हुआ है। वर्तमान में यहां मेट्रो का भी का कार्य प्रगति पर है, जो आने वाले तीन-चार सालों में पूरी तरह से निर्मित हो जाएगा। सूरत टैक्सटाइल व डायमंड मार्केट के लिए विश्वविख्यात तो है ही, साथ ही स्टील उत्पादन के लिए भी विशेष रूप से जाना जाता है। एलएनटी कंपनी द्वारा भारत की सुरक्षा व्यवस्था में लगने वाली गाड़ियां यहीं पर निर्मित होती हैं, जो सूरत के हजीरा में स्थित है। आज सूरत को फ्लाईओवर सिटी के नाम से जाना जाता है, क्योंकि यहां लगभग ११७ फ्लाई ओवर बन गए हैं और १० फ्लाईओवर बनने के कगार पर हैं, इसीलिए यहां ज्यादा ट्रैफिक की समस्या नहीं होती। यहां सभी प्रांतों के लोग बसे हुए हैं, सामाजिक वातावरण बहुत ही उत्तम और सौहार्दपूर्ण बना हुआ है। यहां ९०% अन्य प्रांत के लोग बसे हुए हैं, इसके बावजूद सभी का आपसी व्यवहार बहुत ही मिलनसार है। 'सूरत' की एक कहावत है 'सूरत नो जमण काशीनो मरण'। यहां का सुरती भोजन नहीं खाया तो क्या खाया। ऐसी ही अन्य कई विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की...
'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, जो कि हमारे देश का मूल नाम है।
अशोक जी मूलतः हरियाणा स्थित 'हिसार' के निवासी हैं। आपका जन्म और प्रारंभिक शिक्षा 'हिसार' में ही संपन्न हुयी है। पिछले २० वर्षों से आप 'सूरत' में बसे हुए हैं और साड़ी, निटिंग कपड़े मैन्युफैक्चर व टेक्सटाइल मशीनरी के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। अग्रवाल प्रगति ट्रस्ट के ट्रस्टी व सह सचिव हैं। रघुकुल टैक्सटाइल मार्केट के भी सचिव हैं, अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हैं। जय भारत!

आलोक मित्तल
व्यवसाई व समाजसेवी
झुंझुनूं निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९८२४१४९४२१

आलोक जी अपनी कर्मठ भूमि 'सूरत' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'सूरत' में बहुत ज्यादा परिवर्तन आ गया है, पहले यह शहर रहने लायक नहीं था, चारों तरफ गंदगी फैली हुई थी पर व्यापार के लिए आसान था, इसलिए लोग यहां आकर बसने लगे और प्रवासियों की पहल के कारण ही आज विश्व स्तर में जाना जाता है। 'सूरत' आज फॉरेन कंट्री की तुलना कर सकता है, इमारतें बहुत बढ़ गई हैं, इंफ्रास्ट्रक्चर का विकास बहुत तेजी से हुआ है, अब मेट्रो भी प्रारंभ होने वाली है इसलिए इसका विकास और तीव्र गति से होगा। यहां टेक्सटाइल व डायमंड का मार्केट हमेशा से ही रहा है, सबसे पुराना व्यापार रियल ज़री और आर्टिफिशियल ज़री उत्पादन का है। यहां राजस्थान, यूपी-बिहार, सिंधी, पंजाबी, उड़ीसा आदि क्षेत्रों के लोग काफी हुए हैं, इसे मिनी भारत भी कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी, इसके बावजूद यहां का माहौल बहुत ही शांतिप्रिय है। लोग बड़े ही मिलनसार हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी बढ़-चढ़कर सहभागी होते हैं, सभी समाज द्वारा अपने-अपने विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम संपन्न किए जाते हैं, जिसमें सभी का उत्साह देखते बनता है। पर्यटन की दृष्टि से देखा जाए तो यहां सबसे प्राचीन मंदिरों में अंबाजी का मंदिर, तीन पत्ती मंदिर ऐतिहासिक मंदिर है इसी स्थान पर दानवीर कर्ण का दाह संस्कार हुआ था, ऐसे अन्य कई प्रमुख स्थान हैं जो 'सूरत' को विशेष बनाते हैं।
'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, यही हमारे देश की मूल पहचान है।
आलोक जी मूलतः राजस्थान स्थित झुंझुनूं जिले के 'चनाना' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा झुंझुनू में संपन्न हुई है। पिछले ३५ वर्षों से आप 'सूरत' में व्यवसाय निमित्त बसे हैं और टेक्सटाइल के व्यवसाय से जुड़े हैं। अग्रवाल प्रगति ट्रस्ट व अग्रवाल समाज की विभिन्न संस्थाओं में सदस्य के रूप में सेवारत हैं। जय भारत!

यदि बढ़ाना है देश को विकास की ओर, तो दें हिंदी भाषा पर जोर-बिजय कुमार जैन

अजीत कांकरिया
पूर्व अध्यक्ष साधुमार्गी जैन संघ
गोगलाव निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२४१५४९७६

अजीत जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' के संदर्भ में कहते हैं कि पहले और आज के 'सूरत' में रात-दिन का अंतर आ गया है। पहले यह गंदगी वाला शहर के रूप में जाना जाता था पर आज स्वच्छता की दृष्टि से भारत के दूसरे स्थान पर है, इससे आप अंदाजा लगा सकते हैं कि इसकी पूरी काया ही पलट गई है। आज 'सूरत' का नाम विश्व के प्रमुख शहरों में गिना जाता है। यह टेक्सटाइल उद्योग, रेजिडेंशियल एरिया, सड़कों की व्यवस्था के दृष्टिकोण से यहां का विकास बहुत ही अच्छा हुआ है। 'सूरत' पहले भी कपड़ा व डायमंड का व आज भी इसी के लिए पहचाना जाता है, यहां दूसरे छोटे-बड़े उद्योग भी हैं, इसे मिनी भारत भी कहा जाता है, क्योंकि 'भारत' के विभिन्न राज्यों के लोग यहां बसे हुए हैं, सभी के बीच आपसी व्यवहार बहुत ही उत्तम है। यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही उत्तम है। यहां सभी समाज द्वारा हर पर्व का आयोजन बड़े ही हर्षोल्लास से किया जाता है। 'सूरत' में सभी पर्व २ दिन के लिए मनाए जाते हैं। घूमने-फिरने की दृष्टि से भी यह स्थान बहुत ही उत्तम है। यहां कई प्राचीन और ऐतिहासिक मंदिर हैं, ऐसी ही अन्य कई विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की, यह शांतिप्रिय शहर है जो हर किसी को अपनी और आकर्षित कर लेता है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है की यह सम्राट भरत का क्षेत्र है, इसीलिए इसे 'भारत' कहा जाता है, पर विश्वस्तर पर इसको इंडिया से संबोधित किया जाता है, यदि अपने देश को एक ही नाम से पुकारा जाए 'भारत' तो अति उत्तम होगा।

अजीत जी मूलतः राजस्थान स्थित नागौर जिले के 'गोगलाव' के निवासी हैं। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा उत्तर प्रदेश में संपन्न हुयी है। पिछले ३५ वर्षों से आप 'सूरत' में बसे हैं और फाइनेंस के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। 'सूरत' स्थित साधुमार्गी जैन संघ के पूर्व अध्यक्ष रहे है, वर्तमान में जैन समाज की विभिन्न संस्थाओं में सक्रिय हैं। जय भारत!

पवन झुनझुनवाला
संस्थापक दिल्ली पब्लिक स्कूल सूरत
नवलगढ़ निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८९८०७०५२८

पवन जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'सूरत' में सब कुछ परिवर्तित हो चुका है, पहले यह गांव की तरह था पर आज पूरी तरह शहर बन चुका है, जहां खेती-बाड़ी होती थी, वहां मल्टी स्टोरी बिल्डिंग बन चुकी है, यहां का इन्फ्राट्रक्चर बहुत तेज गति से विकसित हुआ है, यह टेक्सटाइल, डायमंड मार्केट के लिए पूरे विश्व में जाना जाता है, साथ ही यहां रियल जरी व आर्टिफिशियल जरी का काम सबसे पुराना है। 'सूरत' एक पुराना शहर है और व्यवसाय के लिए यह हमेशा से ही अग्रणी रहा है, इसीलिए प्रवासियों को 'सूरत' ने आकर्षित किया। यहां राजस्थानी, पंजाबी, यूपी, बिहारी, मध्य प्रदेश, ओडिशा व भारत के अन्य क्षेत्रों से भी लोग आकर बसने लगे और व्यापार से जुड़े हैं। पहले यहां की आबादी मात्र कुछ लाख की थी पर आज लगभग ७० लाख के करीब है, जिनमें १५ लाख की आबादी यूपी, बिहार, मध्य प्रदेश, उड़ीसा के प्रवासियों की ही है। यहां सभी धर्म समाज के लोग बसे हैं यहां का सामाजिक माहौल बहुत ही उत्तम है। सभी के बीच आपसी मेल-मिलाप हैं, यहां सभी संस्कृतियों का संगम देखने को मिलता है, सभी अपने पर्व बड़े ही हर्षोल्लास से मनाते हैं। सूरत को भारत का सबसे स्वच्छ शहर कहा जाता है।

'सूरत' के मगदल्ला बंदरगाह से मक्का मदीना के लिए पूरे भारत से हज यात्री जाते थे, जो लगभग ४०० साल पुराना है आज भी स्थित है। वर्तमान में यह माल के आयात-निर्यात के लिए ही उपयोग में किया जाता है और इसमें कोयले का आयात व खली और डेप का निर्यात बड़े पैमाने पर होता है। यहां का प्रसिद्ध मुहावरा है 'सूरत नो जमण काशीनो मरण', 'सुरती लाला मौजी लाला' होते हैं, जब चाहे छुट्टी मना लेते हैं पर अपने काम के प्रति भी लगाव रखते हैं और नए-नए बदलावों को अपनाने में हमेशा आगे रहते हैं, इसीलिए 'सूरत' के टेक्सटाइल और डायमंड मार्केट का काफी विकास हुआ है। विश्व में डायमंड कट और पॉलिश का ८०% काम 'सूरत' में ही होता है, यह 'मैन मेड फाइबर' के लिए पूरे 'भारत' में जाना जाता है। एलएनटी कंपनी का टेक्निकल हब है, यहां सबमरीन भी बनाई जाती है जो सूरत के हजीरा पोर्ट में स्थित है। वर्तमान में यहां अदानी का पोर्ट आ गया है। 'सूरत' में एक सरकारी विश्वविद्यालय और तीन निजी विश्वविद्यालय कार्यरत है। इंटरनेशनल एयरपोर्ट है, किसी समय यहां प्रतिदिन ४० फ्लाइट आती-जाती थी। सूरत से हर एक घंटे मुंबई, दिल्ली, पुणे, दक्षिण भारत के लिए ट्रेनें चलती है जो पूरे 'भारत से सूरत' को जोड़ती है। सूरत 'फाइनेंसियल कैपिटल ऑफ गुजरात' और 'सिटी ऑफ ब्रिज' के नाम से भी जाना जाता है। पर्यटन की दृष्टि से देखा जाए तो यहां खाटू श्याम मंदिर जी की तर्ज पर श्याम मंदिर का निर्माण हुआ है जो अग्रवाल समाज द्वारा निर्मित किया गया है। यहां अग्रवाल प्रगति ट्रस्ट द्वारा 'अग्रएग्जॉटिका' बनाया गया है, जो पूरे भारत में कहीं नहीं देखने को मिलेगा, जिसमें १०४ कमरे, पार्किंग की व्यवस्था, २ हॉल व अन्य कई विशेष सुविधाएं हैं। यह अपने आप में अग्रवाल समाज का गौरव है। साउथ गुजरात चेंबर ऑफ कॉमर्स, इंडोर ऑडिटोरियम फिश एक्वेरियम, जैन मंदिर, किला, डच गार्डन जैसे कई पर्यटन स्थल है। सूरत म्युनिसिपल कॉरपोरेशन अपने कार्यों के लिए हमेशा से ही जाना जाता है, आप किसी प्रकार की भी शिकायत करें वह ४८ घंटों में दूर की जाती है। यहां अंडरग्राउंड ड्रेनेज है, यहां की नगर व्यवस्था बहुत ही उत्तम है, ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की...

'भारत का 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का एक ही नाम होना चाहिए भारत।

पवन जी मूलतः राजस्थान स्थित 'नवलगढ़' के निवासी हैं। आपका जन्म 'नवलगढ़' में व संपूर्ण शिक्षा नवलगढ़, मुंबई, कोलकाता स्थानों पर संपन्न हुई है। आप सुजोक थेरेपी के थेरेपीस्ट व लेक्चरर हैं जिसके सूरत में १७ सेंटर हैं। आपको फिलेटलिस्ट और न्यूमिज़मेटिक्स की रूची है। आप दिल्ली पब्लिक स्कूल सूरत, दिल्ली पब्लिक स्कूल वापी व दिल्ली पब्लिक स्कूल तापी के संस्थापक हैं। अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हैं। जय भारत!

बी. एस. अग्रवाल
पूर्व अध्यक्ष सघर्न गुजरात चेम्बर ऑफ कॉमर्स एन इंडस्ट्रीज
बुलंदशहर निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९३७४७१५४७२

बी.एस. अग्रवाल जी अपनी जन्मभूमि 'सूरत' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि एक जमाने में 'सूरत' की आबादी २ लाख के करीब थी, यह बहुत ही छोटा शहर था। धीरे-धीरे यहां टेक्सटाइल उद्योग का विकास होता गया, साथ ही डायमंड उद्योग भी बढ़ता गया, इसीलिए यहां दिन-प्रतिदिन जनसंख्या भी बढ़ती गई। आज इसे टेक्सटाइल व डायमंड सिटी के नाम से जाना जाता है। यह पॉलिस्टर कपड़ों का सबसे बड़ा हब है। यहां करीब ७ लाख पावरलूम, ४०० प्रोसेसिंग हाउस, वॉटर जेटलूम्स व एम्ब्रॉडरी मशीन १ लाख के करीब है। इसी के साथ यहां रियल स्टेट का व्यवसाय भी बढ़ता गया। अन्य सभी सुविधाएं भी यहां बहुत ही अच्छी है। यहां का इंफ्रास्ट्रक्चर अन्य शहरों की तुलना में बहुत ही बेहतरीन है, यहां सभी समाज व संप्रदाय के लोग व्यवसाय व रोजगार से जुड़े हैं, यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही शांतप्रिय है, लोगों में आपसी सामंजस्य बहुत ही उत्तम है। पर्यटन की दृष्टि से देखा जाए तो यह शहर बहुत ही पुराना शहर है इसीलिए यहां कई ऐतिहासिक स्थान है। अंग्रेज भी यहां व्यवसाय के निमित्त आए थे। यहां किला बना हुआ है, जिसका हाल ही में नवीनीकरण किया गया है। यहां कई देवी-देवताओं के मंदिर है जिससे लोगों की श्रद्धा बनी हुई है। ऐसी ही अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की...

बी.एस. अग्रवाल जी मूलत: उत्तर प्रदेश स्थित बुलंदशहर के निवासी हैं, आपका परिवार कई वर्षों से सूरत में बसा हुआ है। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा 'सूरत' में ही संपन्न हुई है, यहां आप बिल्डिंग कंस्ट्रक्शन व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही आप सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। सघर्न गुजरात चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के अध्यक्ष रहे हैं, अग्रवाल समाज में भी अध्यक्ष पद पर अपनी भूमिका निभाई हैं। अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हैं। जय भारत!

मोहनलाल गुप्ता
व्यवसाई व समाजसेवी
भिवानी निवासी-सुरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९१०६९६४४५९

मोहन लाल जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' के संदर्भ में कहते हैं कि लगभग ३५ सालों से मैं सूरत में बसा हूं और इन ३५ सालों में सूरत में बहुत परिवर्तन देखे हैं। आज सूरत डायमंड व कपड़ों का पूरे भारत में प्रमुख केंद्र बन चुका है, खरीदारी के लिए अन्य राज्यों से भी लोग बड़े पैमाने पर आते हैं। यहां की आबादी भी पहले की तुलना में कई गुना बढ़ गई है, साथ ही इन्फ्राट्रक्चर के क्षेत्र में काफी विकास हुआ है। यहां ४०० से अधिक डाई मिले हैं, कपड़ों के क्षेत्र में ६०% राजस्थानी समाज तथा ४०% हरियाणा व अन्य समाज के लोग कार्यरत हैं, सभी के बीच परस्पर सामंजस्य बहुत ही उत्तम है। यहां सभी धर्म व जाति के लोग बसे हैं कई तो व्यवसाय वर्ग से जुड़े हैं, इसलिए सभी के बीच आपसी तालमेल बहुत ही उत्तम है, यहां का सामाजिक माहौल अन्य क्षेत्रों की तुलना में बहुत ही शांतिप्रिय है, सभी की अपनी-अपनी सामाजिक संस्थाएं हैं। यहां के प्रमुख मंदिरों में से अंबाजी का मंदिर, पार्श्वनाथ स्वामी का मंदिर व अन्य कई देवी-देवताओं के मंदिर हैं, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की...

मोहनलाल जी मूलतः हरियाणा स्थित 'भिवानी' जिले के भवानीखेड़ा निवासी है। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा भवानीखेड़ा में संपन्न हुई है। सूरत में आप कपड़ों के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही अग्रवाल समाज में सक्रिय सदस्य के रूप में सेवारत हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए। जय भारत!

मदन मोहन पेड़ीवाल
अध्यक्ष माहेश्वरी भवन सिटी लाइट
छापर निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२४१५१२९६

मदन मोहन जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' के संदर्भ में कहते हैं कि पहले और आज के 'सूरत' में बहुत परिवर्तन आ गया है, पहले छोटी-छोटी गलियां होती थी, आज बड़े-बड़े सड़क बन चुके हैं। रिंग रोड जो मेन मार्केट है वह भी इतना विस्तृत नहीं था, पर आज ४ गुना बढ़ गया है। इंफ्रास्ट्रक्चर के दृष्टिकोण से 'सूरत' प्रमुख शहरों में गिना जाता है, आज फ्लाईओवर सिटी के नाम से जाना जाता है, क्योंकि यहां हर जगह पुल बन गए हैं। उद्योग व्यापार में 'सूरत' हमेशा से ही आगे रहा है। यहां प्रोसेसिंग हाउस, ट्रेडिंग, इंपोर्ट-एक्सपोर्ट का व्यवसाय बड़े पैमाने पर होता है, कपड़ों के व्यवसाय में राजस्थानी समाज विशेष रूप से सक्रिय हैं। डायमंड क्षेत्र में तो हमेशा से ही गुजराती समाज का वर्चस्व रहा है, साथ ही यूपी-बिहार पंजाब-हरियाणा जैसे क्षेत्रों से भी लोग यहां व्यापार व रोजगार हेतु बसे हुए हैं। सभी समाज की अपनी सामाजिक संस्थाएं हैं। माहेश्वरी समाज की भी कई संस्थाएं कार्यरत है। यहां के प्राचीन मंदिरों में अंबाजी का मंदिर, तीन पत्ती मंदिर, सिद्धनाथ महादेव का मंदिर आदि विशेष रूप से प्रमुख है, और भी अन्य कई प्रमुख स्थान है हमारे सूरत में जो 'सूरत' को खास बनाते हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि बिल्कुल ही अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना **शेष पृष्ठ ४० पर...**

हिंदी में मानवता है इसलिए हिंदी सर्वमान्य है-बिजय कुमार जैन

पृष्ठ ३९ से... चाहिए, इंडिया गुलामी का प्रतिक है।
मदन मोहन जी मूलतः राजस्थानी स्थित 'छापर' के निवासी हैं, आप पिछले कई वर्षों से 'सूरत' में बसे हुए हैं और टेक्सटाइल व्यवसाय से जुड़े हैं। माहेश्वरी भवन सिटीलाइट के ट्रस्टी व अध्यक्ष हैं, पूर्व में गुजरात माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष रहे हैं। अन्य कई सामाजिक संस्थाओं में भी सक्रिय हैं। जय भारत!

सेठो का शहर सूरत- सुरेंद्र कुमार डालमिया, उद्योगपति व समाजसेवी

सुरेंद्र जी मूलत: हरियाणा स्थित 'हिसार' के निवासी हैं। आपका जन्म 'हिसार' में व संपूर्ण शिक्षा 'दिल्ली' में संपन्न हुई है। तत्पश्चात आपने दिल्ली में कपड़ों का व्यवसाय प्रारंभ किया और इसी की एक शाखा स्थापित करने के लिए आपका 'सूरत' आना हुआ, तब से आप 'सूरत' में बसे हुए हैं और कपड़ा उद्योग से जुड़े हैं। आपकी प्रयागराज डाइंग एंड प्रिंटिंग मिल है, साथ ही आप पार्टिकल बोर्ड सूरत हासोट बोर्ड उत्पादन से भी जुड़े हैं, जो भारत की सबसे श्रेष्ठ कंपनी में गिनी जाती है। सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय भागीदारी निभाते हैं पिछले ६५ वर्षों से राष्ट्रीय स्वयं सेवा संघ से जुड़े हैं और भाजपा के सदस्य हैं। विशेषकर आप वर्तमान में शमशान भूमि निर्माण कार्य से जुड़े हैं। सूरत में उमरा शमशान भूमि के निर्माण में आपकी अहम भूमिका रही है, इसी की तर्ज पर आप बुढ़िया गांव व लिंबायत में भी शमशान भूमि का निर्माण करवा रहे हैं। अन्य कई सामाजिक कार्यों से भी जुड़े हैं। आपने अपनी फैक्ट्री में ६० गायों की गौशाला भी बना रखी है। अग्रवाल विकास ट्रस्ट एपीएल क्रिकेट टीम के संस्थापक हैं जिसकी स्थापना १५ वर्ष पूर्व की गयी थी, तबसे हर वर्ष टूर्नामेंट का आयोजन किया जा रहा है। आपने अपने देहदान की भी घोषणा की हुयी है।

सुरेंद्र जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'सूरत' में बहुत ही परिवर्तन आ गया है, पहले सूरत के टेक्सटाइल मार्केट से मात्र ५ किलोमीटर शहर की तरफ आने पर जंगल नजर आता था और यहां सभी तरफ गंदगी थी, पर आज 'सूरत' पूरी तरह से बदल चुका है। आज विश्व के प्रमुख शहरों में से एक गिना जाता है, स्वच्छता की दृष्टि से यह 'भारत' के दूसरे स्थान का शहर है, जिसे सभी सूरत वासी पहले स्थान पर लाने का प्रयास कर रहे हैं। सूरत को सेठो का शहर कहा जाता हैं। पहले यहां के गुजराती लोग हिंदी नहीं बोल पाते थे पर जब से हिंदी भाषी राज्यों के लोग यहां प्रवास करने लगे तो धीरे-धीरे सभी हिंदी भाषा जानने, समझने व बोलने लगे। यहां के मूल निवासियों व प्रवासियों के बीच आपसी सामंजस्य बहुत ही अच्छा है।

यहां का सामाजिक वातावरण हमेशा शांतिपूर्ण रहता है। सूरत में पर्यटन का भी डेवलपमेंट किया जा रहा है, यहां के प्रसिद्ध मंदिरों में अंबाजी का मंदिर, शनि देव जी का मंदिर विशेष रूप से उल्लेखनीय है जो लोगों की श्रद्धा का मुख्य केंद्र है। अन्य क्षेत्रों से भी लोग यहां दर्शन के लिए आते हैं, ऐसी ही अनेक और भी विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की...

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाना चाहिए' विषय पर आपका कहना है कि यह भरत की भूमि है, इसीलिए इस देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, इंडिया का कोई मतलब नहीं है 'भारत' ही हमारी पहचान है। जय भारत!

'हम भारत के रहनेवाले है
भारत की बात सुनाते हैं'।

उमरा शमशान भूमि, नवसारी, सूरत

गुजरात भाजपा अध्यक्ष सी.आर. पाटील के साथ डालमिया जी उमरा शमशान की वीजीट पर

फैक्ट्री में स्थित गौशाला

कैलाशचंद पाटनी
अध्यक्ष पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर सूरत
सीकर निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२५१३४२४६

कैलाश जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि आज से ४० साल पहले का सूरत शहर में परिवर्तित हो चुका है। पहले यहां टेक्सटाइल के चार ही मार्केट हुआ करते थे आज बहुत मार्केट हो चुके हैं। आज यह फ्लाईओवर का शहर कहा जाता है, यहां अन्य प्रांतों के लोग भी व्यवसाय व रोजगार निमित्त आकर बसने लगे हैं, इसके बावजूद यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही शांतिपूर्ण है। यहां सभी संस्कृति की झलक दिखाई देती है, यहां के लोग व्यवसाय के साथ-साथ धार्मिक व सामाजिक प्रवृत्ति के हैं, यहां हर धर्म व समाज के कई सामाजिक संस्थाएं कार्यरत हैं, यह धार्मिक नगरी भी कहा जाता है, कई मंदिर विशाल रूप में बने हुए हैं, सबसे प्रमुख मंदिर अंबाजी का जो प्राचीन व भव्य रुप में बसा हुआ है। प्रवासियों द्वारा खाटू श्याम जी का मंदिर बनाया गया है। सूरत शहर में दिगम्बर समाज की आबादी ३००० परिवार से भी अधिक है, जिनके यहां लगभग १६ मंदिर हैं। २००४ में पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर का निर्माण किया गया, जिसमें सभी ने अपना पूर्ण सहयोग दिया, ऐसी अनेक विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की...

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का एक ही नाम होना चाहिए 'भारत' आचार्य विद्यासागर जी ने इसका आव्हान किया है।

कैलाश जी मूलतः राजस्थान स्थित 'सीकर' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'सीकर' में संपन्न हुई है। १९८२ से आप 'सूरत' में बसे हुए हैं, टेक्सटाइल उद्योग से जुड़े हैं, साथ ही कई सामाजिक संस्थाओं में भी सक्रिय हैं। सूरत स्थित पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर के अध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं। जय भारत!

श्रीकांत बंग
व्यवसाई व समाजसेवी
मुण्डवा निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९३७६११२१८८

श्रीकांत जी अपनी कर्मभूमि 'सूरत' की विशेषताओं का वर्णन करते हुए कहते हैं कि पहले के मुकाबले आज का 'सूरत' पूरा ही बदल चुका है, यहां के सभी क्षेत्रों में बदलाव आए हैं। यहां का आर्थिक विकास पहले की तुलना में कई गुना अधिक बढ़ा है, साथ ही यहां के लोग व्यवसाय के साथ-साथ नौकरी के क्षेत्र में भी कार्यरत हैं। राजस्थानी समाज में अग्रवाल, माहेश्वरी, जैन व अन्य समाज के साथ पंजाब, हरियाणा, यूपी-बिहार, ओडिशा व अन्य राज्यों के लोग भी यहां कार्यरत हैं। सभी समाज व धर्म के लोग बसे होने के बावजूद यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही उत्तम है, यहॉ का माहौल हमेशा शांतिपूर्ण बना रहता है। माहेश्वरी समाज की आबादी पहले की तुलना में बहुत अधिक बढ़ गई है। माहेश्वरी समाज की विभिन्न संस्थाएं भी कार्यरत हैं, जिसमें माहेश्वरी भवन, स्पोर्टस क्लब, युवक मंडल, महिला मंडल की संस्थाएं सामाजिक क्षेत्रों में विशेष रूप से सक्रिय हैं। यहां के लोग खाने-पीने के बड़े ही शौकीन हैं, इसीलिए यहां हर प्रकार के भोजन उपलब्ध हो जाते हैं जिनमें पंजाबी, राजस्थानी, गुजराती, दक्षिण भारतीय व्यंजन विशेष रूप से प्रमुख हैं। पर्यटन की दृष्टि से देखा जाए तो यहां का 'दुम्मस' बीच विशेष रूप से उल्लेखनीय है, ऐसी ही कई विशेषताएं हैं हमारे 'सूरत' की...

६९ वर्षीय श्रीकांत जी मूलतः राजस्थान के नागौर जिले में स्थित 'मुण्डवा' के निवासी हैं। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा सोलापुर महाराष्ट्र में संपन्न हुई है। पिछले ३० वर्षों से आप सूरत में बसे हुए हैं और कपड़ों के व्यवसाय से जुड़े रहे, वर्तमान में आपके पुत्र व्यवसाय में सक्रिय हैं, आप सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। माहेश्वरी मैरिज ब्यूरो, माहेश्वरी युवक मंडल के सदस्य हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' विषय पर आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, यही हमारे देश का मूल नाम है और यही हमारी वास्तविक पहचान है। जय भारत!

डायमंड सिटी सूरत के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

GIRDHARGOPAL MUNDRA
Mob. : 98241 11900

Group Chairman : The Southern Gujarat Chamber of Commerce and Ind. & GFRRC
Trustee : Shree Mahavir Health & Medical Relief Society
Past President : Surat Jilla Maheshwari Sabha
Vice President : Amroli College and Hospital
Vice President : B. Soni Education Trust
Akhil Bhartiya Maheshwari Mahasabha

Ramanuj Palace 81, Sant Tukaraam Society-3, Ashirwad Palace Behind Gate No. 6, Bhatar Road, Jivkar Nagar, Vanita Mishra Bunglows, Surat, Gujarat, Bharat-395006

औद्योगिक नगरी सूरत के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

CA Mahesh Mittal
Mob. : 9374711350
National President: Ekal Shree Hari Satsang Samiti
President : Agarwal Pragati Trust, Surat

403, Metro Tower, Ring Road,
Surat, Gujarat, Bharat-395002

With Best Compliments

GURU RAJENDRA METALLOYS INDIA PVT LTD

G R METALLOYS PVT LTD

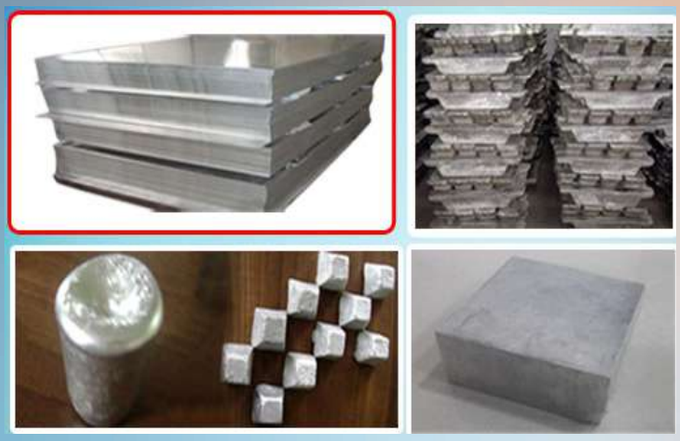

SHAH BABULAL DHANRAJJI JAIN

JAYANT BABULAL JAIN

SHAILESH BABULAL JAIN

Manufactures of Aluminium Alloy Ingot, Aluminium Ingot, Aluminium Notch bar, Aluminium Shots, Aluminium Cubes

8, Gautam Vihar Society, Opp. Sukhsagar Complex, Aroma School Road, Ashram Road, Usmanpura, Ahmedabad, Gujarat , Bharat– 380 013.

जैन समाज एकत्र हो यह है हमारा नारा
इसके लिए चाहिए मात्र आप ही का सहारा

पंजीकृत कार्यालय

बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९

दूरध्वनि: ०२२-२८५० ९९९९ अणुडाक: mailgaylordgroup@gmail.com अन्तरताना : www.jinagam.co.in

Postal Registration Number - MCN/294/2021-2023
WPP License No. MR/Tech/WPP-354/North/2021-23
Published on 19th October 2022 & Posting on 20th of Every Month
Posted at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059.

K-LOUNGE

FOR FRANCHISEE & INSTITUTIONAL ENQUIRY CALL:

WEST AND SOUTH
9820805602

NORTH: 9356002685

EAST: 9431015400

ODISHA & CHATTISHGARH
9937004020

MP: 9329262926

CORPORATE OFFICE (MUMBAI)
022-26814400

OR EMAIL:
franchisee@kewalkiran.com

KKCL
KEWAL KIRAN CLOTHING LIMITED

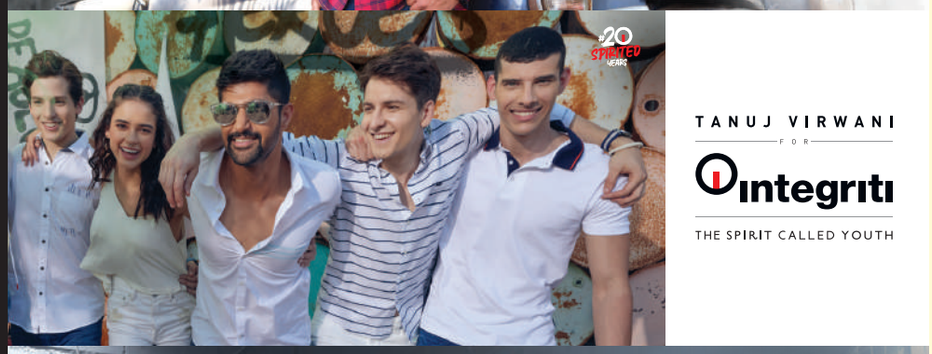

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड व संपादक, मुद्रक व प्रकाशक बिजय कुमार जैन, बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059 से मुद्रित करवा कर बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400 059 से प्रकाशित किया गया, टेलीफैक्स-०२२-२८५० ९९९९, अणुडाक-mailgaylordgroup@gmail.com, अन्तरताना - www.mainbharathun.co.in,
द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्ज रोड, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400093 से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया गया।

RNI No. MAHHIN/2010/48574